



अमृत



अमृत अंक 30, सितंबर 2021: विमोचन करते हुए उच्च प्राधिकारी

महालेखाकार (लेखा व हकदारी) का कार्यालय, तमिलनाडु
361, अन्न सलै, टेयनांपेट, चेन्नई- 600018
अंक : 31वाँ, सितंबर 2022



हिंदी पखवाड़ा 2022 का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते: व. उपमहालेखाकार/प्रशासन



हिंदी पखवाड़ा 2022 का उद्घाटन समारोह: व. उपमहालेखाकार महोदय का संबोधन

वदना

भावों के मधु सुमन मात तेरे श्री चरणों में भर २०५६



ऐसा वर दो हे वरदायिनी मानव में नव रव भर दूँ

अमृत परिवार

प्रकाशन अमृत (विभागीय हिंदी पत्रिका)	संरक्षक श्रीमती माधवी पी. महालेखाकार (लेखा व हक)
प्रकाशक कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक) तमिलनाडु, चेन्नई-600018	प्रधान संपादक श्री एन. दिनकरन वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)
अंक 31 वाँ	निर्देशन श्री एम. सुधाकरन वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी)
प्रतियाँ 50	संपादक श्री सुभाष चंद यादव हिंदी अधिकारी
मूल्य राजभाषा के प्रति निष्ठा	हिंदी परिवार सुश्री जुलियट विमला सहायक लेखा अधिकारी
मुद्रक जया ग्राॅफिक्स, चेन्नई	

टिप्पणी

इस अंक में रचयिताओं द्वारा व्यक्त किए गए विचार उनके अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। विचारों व लेखन की मौलिकता से संबंधित पूर्ण जिम्मेदारी रचनाकार की स्वयं की है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायिक क्षेत्र चेन्नई रहेगा।



सत्यमेव जयते



संदेश

महालेखाकार की कलम से...

कार्यालय की गृह पत्रिका 'अमृत' की 31वें अंक के प्रकाशन को देखकर अपार प्रसन्नता हो रही है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में विभागीय पत्रिकाएँ बहुत सहायक सिद्ध होती हैं तथा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह पत्रिका हमारे कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों के हिंदी के प्रति समर्पण और निष्ठा का प्रतीक है और यह भी साबित करती है कि कार्यालय में राजभाषा हिंदी का उपयोग बढ़ रहा है। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल और सभी रचनाकारों को बधाई।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु विशेष शुभकामनाएँ।


(माधवी पी.)

महालेखाकार (ले. व ह.)

चेन्नई

29.09.2022



सत्यमेव जयते



प्रधान संपादक की कलम से...

अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय की गृह पत्रिका 'अमृत' के 31वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी में अपने कर्तव्य का निर्वहन करना न केवल हमारा नैतिक कर्तव्य है बल्कि संवैधानिक कर्तव्य भी है। मुझे पूरा विश्वास है कि 'अमृत' पत्रिका कर्मचारियों और अधिकारियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहायक सिद्ध होगी। इस पत्रिका के 31वें अंक तक का निरंतर सफल प्रकाशन स्टाफ के उत्साह का परिणाम है। इस संबंध में किए गए प्रयासों के लिए मैं संपादक मंडल को बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ।

(एन. दिनकरन)

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)

चेन्नई

29.09.2022

संपादक की कलम से...



कार्यालय की हिंदी गृह-पत्रिका 'अमृत' का 31 वाँ अंक बड़ा ही ज्ञानवर्धक और भाषाई बंधुत्व का प्रतीक है। जिस प्रकार संस्कृति अनेकता एकता में निरूपित हो जाती है ठीक उसी प्रकार हिंदी भाषा भी देश की अनेक क्षेत्रीय भाषाओं को एकता के सूत्र में पिरोने के लिए कार्यरत है। देश का बहुभाषी समाज कोई समस्या न होकर एक अनोखा मनमोहक दृश्य बनाता है जिससे हमें गौरान्वित होना है क्योंकि यह भाषाई गौरव देश में चहुँमुखी चिरसौंदर्य का जनक है। देश में 22 भाषाओं को संवैधानिक मान्यता है जो देश के भाषाई सौंदर्य की अभिव्यक्ति का ही प्रयास है अतः इस भाषाई सौंदर्य की अभिव्यक्ति का जीवन मूल्य की तरह सम्मान करना चाहिए क्योंकि यही वह बिन्दु है जहाँ से हमारी समग्र उन्नति का मार्ग प्रसस्त होता है। सभी भाषाओं का अपना एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक मूल्य है तथा उनकी अपनी अक्षर संबंधित वैज्ञानिकता है जो हमारे पूर्वजों के समृद्ध ध्वनि-ज्ञान का प्रमाण है। भारत भूमि की सभी भाषाएँ हमारा गौरव हैं और ईश-तुल्य हैं क्योंकि ये हमें अभिव्यक्ति के साधन के रूप में मिला 'ईश्वर का उपहार' हैं अतः अनेक भाषाएँ सीखना ईश्वर के उपहार का अमृतपान करना है और 'अमृत' पत्रिका उसी अमृतपान का एक जरिया है।

आशा है हिंदी को सभी अपना अमूल्य योगदान सदैव देते रहेंगे।

(सुभाष चंद यादव)

हिंदी अधिकारी

अनुक्रमणिका

क्र.	रचनाएँ	रचनाकार (श्री/सुश्री)	पृ.सं.
1	भूमण्डलीय उष्णता: एक गंभीर चुनौती	एन. दिनकरन, व.उपमहालेखाकार/प्र	7
2	रामचरितमानस: भारतीय दर्शन की अनमोल निधि	सुभाष चंद यादव, हिंदी अधिकारी	10
3	महालेखाकार के लेखा और लेखाचक्र	आर. विश्वनाथन, व. लेखाधिकारी	13
4	सपना जो सच हुआ	जुलियट विमला बी, स. लेखाधिकारी	15
5	धरती को बचाओ	सी. अनुराधा, स. लेखा अधिकारी	18
6	बच्चों पर इंटरनेट का प्रभाव	पी. गणेश, लेखाकार	20
7	'रामकथा सुरधनु सम'	सुभाष चंद यादव, हिंदी अधिकारी	21
8	आजादी की लड़ाई के गुमनाम सिपाही	मंजू मोनिषा डी.	24
9	तालिबान का इतिहास	संजय कुमार सिंह, वरिष्ठ अनुवादक	27
10	बिहार: एक परिचय	शशिकांत कुमार, लेखाकार	29
11	कार्यालय में हिंदी कार्यों को बढ़ावा देने के उपाय	वे. राजू, सहायक लेखा अधिकारी	32
12	आजादी के 75 साल	अजय नाथ त्रिपाठी, लेखाकार	33
13	शिक्षक	आर शांति, व. लेखा अधिकारी	34
14	पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के उपाय	दीपा सिंह, लेखाकार	35
15	एक नया एहसास	संतोष कुमार, लेखाकार	36
16	जिम्मेदारी	अमित कुमार साह, वरिष्ठ लेखाकार	39
17	तुम याद आती हो माँ!	एम. रामास्वमी, व. लेखा अधिकारी	40
18	गीता सार	वृंदा सुंदर, सहायक लेखा अधिकारी	40
19	अपनी-अपनी राह	आर चित्रा, व.ले. अधिकारी	41
20	गुमराह	शिवजी पांडेय, लेखाकार	41
21	बेरोजगार की व्यथा	अनिल कुमार, लेखाकार	42
22	समाज की व्यथा	अजय नाथ त्रिपाठी, लेखाकार	42
23	रामकथा कलि बिटप कुठारी	पवन कुमार सिंह, लेखाकार	43
24	बेहतर कल के लिए आज ही बचाएँ	वे. राजू, सहायक लेखा अधिकारी	44
25	खुद को बिखरने मत देना	ई के नटराजन, स. लेखा अधिकारी	46
26	बिहार की बाढ़	शिवजी पांडेय, लेखाकार	48
27	कार्यालय में योग अभ्यास	एम. प्रेमलता, स. लेखा अधिकारी	50
28	हिंदी दिवस का राष्ट्रीय आयोजन	एम. सुधाकरन, व. लेखा अधिकारी	51
29	आपके अभिमत	हिंदी अनुभाग	52

भूमण्डलीय उष्णता: एक गंभीर चुनौती

एन. दिनकरन, वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)



हम जिस धरती पर रहते हैं, वह ईश्वर की देन है। स्वस्थ जीवन के लिए पृथ्वी ग्रह पर पर्यावरण एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। चूँकि पृथ्वी पृकृति की अनुपम जीवित कृतियों का घर है जिसमें अनेक प्रजातियाँ हैं। ये सभी अपनी भोजन, श्वसन और जल संबंधित जरूरतों के लिए पर्यावरण पर निर्भर हैं। अतः हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम पर्यावरण की रक्षा करें। मनुष्य विविध तरीकों से पर्यावरण को खराब कर रहा है।

जल निकायों में कचरे का वहन करना, कार्बन से जुड़ी गैसों का उत्सर्जन करना, प्लास्टिक का अंधाधुंध उपयोग करना आदि प्रमुख बिगाड़ हैं। बड़े उद्योगों के अपशिष्ट केमिकल कचरे सहित मानव उपयोग के बाद बचा हुआ प्लास्टिक का कचरा जल निकायों में मिलकर एक गंभीर समस्या खड़ी करता जा रहा है, जिस पर तुरंत चिंतन करने की आवश्यकता है। औद्योगिक अपशिष्टों से जल निकायों को मुक्ति दिलाने हेतु और औद्योगिक गैसों के उत्सर्जन को उपचारित करने की बाध्यता से जुड़े कठोर प्रतिबंधों की भी नितांत आवश्यकता है। प्रत्येक पैक की हुई बाजार वस्तु प्लास्टिक पैकिंग में ही उपलब्ध है। इनमें फेशनेबल सामग्री, पान-मसाला, खाद्य वस्तुएँ और पेय पदार्थों की पैकिंग प्रमुख हैं। ये मानव जीवन के अभिन्न अंग बनकर उभरे हैं। एक अनुमान के अनुसार मानव सुबह उठने से लेकर सोने तक औसतन पचास ग्राम प्लास्टिक और पोलिथीन का कचरा उत्पन्न करता है जो जल्द ही एक गंभीर राष्ट्रीय समस्या के रूप में सम्मुख आने वाला है क्योंकि इस कचरे का कोई पुनर्चक्रण नहीं है।

प्राकृतिक पदार्थों के खनन के उपरांत उनको उपयोग योग्य बनाए जाने की प्रविधि में विविध प्रकार के अपशिष्ट पदार्थों को वातावरण में छोड़ा जाता है जो निरंतर धरती की आबोहवा को खराब कर रहे हैं। गरमी से बचने के लिए घरों में और शीतग्रहों के निर्माण के

इस कार्यालय के लिए यह बड़े सौभाग्य का विषय है कि आला अधिकारी हिंदी लेखन से जुड़े हुए हैं। राजभाषा पत्रिकाओं में उच्च प्राधिकारियों के जुड़ने से पत्रिका की गुणवत्ता तो बढ़ती ही है, साथ ही लेखकों का रुझान भी बढ़ता है जिससे लेखन के स्तर का भी उन्नयन होता है और पत्रिका के सम्मान को चार चाँद लग जाते हैं। इससे राजभाषा को प्रोत्साहन के साथ-साथ इससे जुड़े कार्मिकों को भी आत्मबल मिलता है।

यह आलेख प्रदूषण के कारण धरती पर आने वाले संकट से तो चेताता ही है साथ ही पाठकों को साहित्यिक रसानुभूति भी कराता है। इस रचना में परिष्कृत साहित्यिक शब्दों का प्रयोग भाषा को गुणवत्ता के उच्च शिखर पर ले जाता है जब लेखक कहते हैं-

आओ हम इस कालकूट को
नीलकंठ प्रभु शिव के जैसे
एक जगह पर स्थिर कर दें
भुजंगों को विषहीन कर दें।

-संपादक

लिए जो संसाधन काम आते हैं वे निरंतर क्लोरोफ्लोरोकार्बन का उत्सर्जन कर रहे हैं जो ग्रीनहाउस गैसों में निरूपित होकर धरती को ग्लोबल वार्मिंग की तरफ धकेल रहा है। इसके दुष्परिणाम सामने आने शुरू हो चुके हैं और पृथ्वी का औसत तापमान निरंतर वृद्धि की ओर अग्रसर है फलतः ग्लेशियर पिघलते जा रहे हैं और अनेक दुर्लभ जीव प्रजातियाँ या तो विलुप्त हो चुकी हैं या फिर विलुप्ति के कगार पर खड़ी हैं जो चिंता का विषय है।

इसको रोकने के लिए हमें इस तरह की गैसों छोड़ने वाले उपकरणों का उपयोग सीमित करना होगा। निजी परिवहन के साधनों के उपयोग को सीमित कर सार्वजनिक परिवहन के साधनों को तरजीह देनी होगी। इससे हम एक सीमा तक पर्यावरण प्रदूषण को कम करने



में हमारा व्यक्तिगत योगदान दे सकते हैं। रीसाइकल हो सकने वाली दैनिक उपयोग की वस्तुओं को ही उपयोग में लेने को वरीयता दी जानी चाहिए। जैसे खरीददारी के लिए कपड़े या जूट का बैग साथ लेकर जाएँ जो खरीद सामग्री को लाने में पोलिथीन की थैलियों की उपयोगिता पर विराम लगाएगा। कोल्ड ड्रिंक्स और अन्य पेय पदार्थों की प्लास्टिक बोतल पैकिंग सर्वाधिक प्लास्टिक कचरे की कारक है, इनकी पैकिंग कागज के उत्पादों में करवाने के लिए तुरंत चिंतन करना होगा। उपयोग में न आ रही हो तो एसी और बिजली बंद कर देनी चाहिए क्योंकि बिजली का सीमित उपयोग बिजली का उत्पादन करने जैसा है। आपको मालूम होना चाहिए की हमारे देश में बिजली का अधिकतम उत्पादन कोयले पर आधारित है अतः बिजली बनाया जाना भी प्रदूषण का कारक है। बिजली के दुरुपयोग को रोकने की तरफ कदम उठाए जाने की जरूरत है। यदि ग्लोबल वार्मिंग यूँ ही बढ़ती रही तो निकट भविष्य में ही यह विकराल रूप ले लेगी और फिर इसका कोई निदान नहीं हो सकेगा अतः समय रहते ही चेतने की आवश्यकता है।

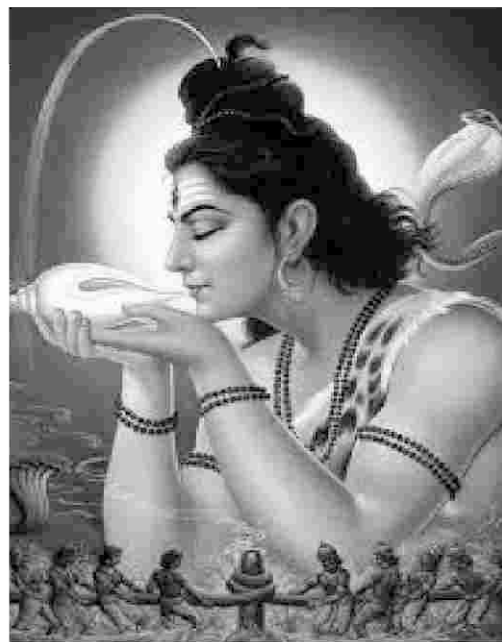
इसके अलावा भूस्खलन और अनावृष्टि की समस्या वनस्पति की अंधाधुंध कटाई से उत्पन्न हुई है। बड़ी मात्रा में जंगल काटे जा रहे हैं जबकि वनों की कटाई सदा से पर्यावरण के लिए खतरा रही है। भवन निर्माण और कॉलोनियों के विकास के लिए जमीन साफ की जाती है तो भी पहले पेड़ों की बलि ली जाती है। वनों की कटाई को पूरी तरह से प्रतिबंधित करने की जरूरत है। अधिक से अधिक पेड़ लगाए जाएँ और इसके लिए प्रोत्साहन की भी आवश्यकता है।

पेड़ों की अवैध कटाई पर सख्त कार्रवाई करने का वक्त आ गया है इसमें ढील नहीं दी जानी चाहिए। किसी भी संयंत्र की स्थापना के लिए एक निश्चित एकड़ भूमि पर वृक्ष लगाए जाने की बंदिश लगाई जानी चाहिए और उनकी नियमित देखरेख के लिए उन्हें बाध्य किया जाना चाहिए। इससे पर्यावरण प्रदूषण करने वाले उद्योग अपनी पर्यावरणीय जिम्मेदारियों को भी साध सकेंगे और वे वृक्षारोपण के साथ-साथ उनकी रखवाली और पालन-पोषण के लिए भी उत्तरदायी होंगे। इस तरफ कोई ध्यान नहीं देता कि एक व्यक्ति की वजह से कटने वाले पेड़ों के विरुद्ध कितने पेड़ लगाए गए? मिट्टी के क्षरण से मैदानी भागों के जन जीवन को हानि पहुँचती है, साथ ही अतिवृष्टि और अनावृष्टि की समस्या से मुक्ति वृक्षारोपण करके ही संभव है। जनता और सरकार द्वारा साझा प्रयास करके धरती की बढ़ती उष्णता के कारकों पर लगाम लगाई जा सकती है अतः सबका साथ जरूरी है। रहने योग्य बेहतर पृथ्वी कायम रखने के लिए सबको हाथ मिलाना होगा। वर्तमान पीढ़ी को भी भविष्य की पीढ़ी की पीड़ा को रोकने के लिए ग्लोबल वार्मिंग के प्रति जिम्मेदारी समझनी होगी। हमें अपनी भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित और खुशहाल वातावरण निर्मित करने की जरूरत है। परिवर्तन के बिना प्रगति असंभव है अतः हमें अपने विचारों में भी परिवर्तन करना होगा हर प्रयास मायने रखता है। हरेक छोटा कदम आगे बढ़ता है तो मीलों का सफर तय करने की सामर्थ्य रखता है अतः आगे बढ़ने के लिए पहला कदम उठाना ही होगा। बीज से ही विशाल वृक्ष का निरूपण होता है अतः छोटा कुछ नहीं है केवल आरंभ की आवश्यकता है। आगे बढ़ने पर हमें दिखाई देगा कि हमने एक बड़े भाग्य का निर्माण कर लिया है। इससे पर्यावरण स्वस्थ होगा। हमें यह महसूस करने की जरूरत है कि धरती का स्वास्थ्य ठीक नहीं है। पर्यावरण के साथ सद्व्यवहार की जरूरत है ताकि हमारी आगामी पीढ़ियों को एक स्वस्थ जीवन मिल सके। इससे जुड़ी चार पंक्तियाँ दृष्टव्य है-

धरती बचाने को बढ़ाओ हाथ
हिचको मत, सब आओ साथ
मनुज होने की यही गरीयता
परमार्थ भाव पाए वरीयता

धरती है पोषक माँ समान
तो कूड़ा कर्कट विष समान
यूँ विष देना इसका अपमान
कि ये हलाहल धरती को उजाड़े

आओ हम इस कालकूट को
नीलकंठ प्रभु शिव के जैसे
एक जगह पर स्थिर कर दें
भुजंगों को विषहीन कर दें।



रामचरितमानस: भारतीय दर्शन की अनमोल निधि

सुभाष चंद यादव, हिंदी अधिकारी



साहित्यकार समाज का पारखी होता है। वह समाज की दिशा और दशा दोनों पर दृष्टि जमाए रखता है तथा अपनी लेखनी के माध्यम से कुरीतियों का शमन करने की तरफ समाज के उत्थान में अपनी भूमिका निभाता है। निश्चित रूप से गोस्वामी तुलसीदास जी ने मानस के माध्यम से तत्कालीन समाज को विभाजित सांप्रदायिक मतों से होने वाली हानि से उबारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। भगवान के दोनों स्वरूपों भगवान शंकर एवं श्रीराम को एक दूसरे का उपासक बता कर, एक-दूसरे के प्रति सम्मान दिखा कर उनके धर्मावलम्बियों अथवा उपासकों के परस्पर द्वन्द को निर्मूल कर दिया, जब उन्होंने कहा कि जो शिव से द्रोह रखता है और मेरा भक्त कहलाता है, वह मनुष्य स्वप्न में भी मुझे नहीं पाता। शंकर से विमुख होकर (विरोध करके) जो मेरी भक्ति चाहता है, वह नरकगामी, मूर्ख और अल्पबुद्धि है-

सिव द्रोही मम भगत कहावा। सो नर सपनेहुँ मोहि न पावा॥

संकर बिमुख भगति चह मोरी। सो नारकी मूढ़ मति थोरी॥ मानस/6/1/चौ.4

इतना ही नहीं शैव और वैष्णवों मतान्तर विरोध को उन्होंने इस कदर अस्वीकृत किया कि दोनों एक दूजे के पूरक हो गए-

संकरप्रिय मम द्रोही सिव द्रोही मम दास।

ते नर करहिं कलप भरि घोर नरक महुँ बास॥

मानस/6/2



तुलसी का मानस केवल हिंदी साहित्य में ही नहीं वरन संसार की अनेक भाषाओं के साहित्य में और धार्मिक ग्रन्थों में अनुपम स्थान रखता है। इसमें आए हुए उपदेशों और नीति सूत्रों का विचारपूर्वक मनन करने से और अनुसरण या आचरण करने से अनेक सांसारिक एवं अलौकिक कार्य सिद्ध होते हैं। इसके दोहों और चौपाइयों में बतलाई गई नीतिगत उक्तियाँ जीवन संघर्षों, राजनीतिक कठिनाइयों, कूटनीतिक चालबाजियों आदि में स्वयं को धैर्यपूर्वक प्रस्तुत करने, उनका सामना करने, उन पर कामयाबी प्रदान करने और उनकी विकटता को आसान बनाने में सक्षम तो है ही साथ ही जीवन जीने की कला प्रदान करती है और कठिन

स्थितियों में विकट समस्याओं का सामना करने की शक्ति भी प्रदान करती है। नीतिगत तथ्यों से जुड़ी रामचरितमानस की चौपाइयाँ, दोहे और छंद मानस के पात्रों का जीवन के प्रति दृष्टिकोण, इनमें छुपे जीवन सत्यों को उजागर करने, इसके पात्रों द्वारा स्थितियों की विकटता से निपटने के अपने तरीकों का उद्घाटन करने और सत्य के मार्ग पर चलने के साथ-साथ इनके माध्यम से तुलसी ने जीवन आदर्शों की स्थापना की है। वाल्मीकि रामायण, महाभारत, विष्णु पुराण, भागवत पुराण और शिवपुराण भारतीय संस्कृति, धर्म और साहित्य के प्रेरणा स्रोत रहे हैं लेकिन तुलसी की रामकथा का इन सबमें अपना महत्व रहा है। भारतीय उपमहाद्वीप के समाज में राम सर्वकालिक सतत् प्रेरणा स्रोत रहे हैं। रामकथा का प्रथम काव्यमयी लोकप्रिय और क्रमबद्ध स्वरूप वाल्मीकि रामायण में प्राप्त होता है।

यद्यपि वेद में रामकथा का समग्र रूप उपलब्ध नहीं है परन्तु उसके विशिष्ट चरित्र बीज रूप में ऋग्वेद में यत्रतत्र अवश्य उपलब्ध हैं। सृष्टि के प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद के दशम मंडल



में राम, दशरथ, सीता, जनक, इक्ष्वाकु आदि नाम आते हैं। इतना ही नहीं वेदों पर लिखी गई गद्य टीकाओं 'ब्राह्मणों' में से ऐतरेय एवं शतपथ ब्राह्मण में भी राम, सीता, दशरथ का उल्लेख हुआ है। विख्यात ग्रंथ महाभारत में तो द्रौण, शांति और आरण्यक पर्व इन तीन पर्वों में कुल चार जगह रामकथा का उल्लेख अथवा विस्तार वर्णन आया है। इसके अतिरिक्त वैष्णव संहिताओं और उपनिषद् भी रामकथा संपन्न हैं। अगस्त्य, कलिराघव और राघवीय संहिताओं में तो राम की दास्यभक्ति का उपदेश मिलना भी आरंभ हो जाता है। ईशा के लघुभग पाँच सौ वर्ष पूर्व रामकथा की लोकप्रियता चरम पर रही होगी। इसी से प्रभावित होकर बोधिसत्व को विष्णु अथवा राम का ही अवतार समझने में बौद्धों को कोई हिचक महशूस नहीं हुई। यद्यपि बौद्धों के जातक साहित्य में रामकथा सुरक्षित रखी गई किंतु हिन्दू सनातन धर्म से अस्तित्व का विरोध होने से जातकों में रामकथा का थोड़ा विकृत रूप प्रस्तुत किया गया है जो सनातन धर्म से बौद्धों के अस्तित्व की सीधी टकराहट से उत्पन्न पूर्वाग्रह के कारण हुआ होगा। उदाहरण के लिए राम को अयोध्या के बजाए काशी का राजकुमार बतलाना और सीता को राम की बहन कहाँ और अंत में दोनों का विवाह करा देना जैसी घटनाएँ पूर्वाग्रह की दुर्गंध उत्पन्न करती हैं। यद्यपि जैन धर्म में पउमचरयु और अरिष्टनेमिचरियु में

भी रामकथा है लेकिन उनको भी जैन दृष्टि से प्रस्तुत कर अनेक स्थलों पर विरोधाभास दिया गया है। सीता को रावण की पुत्री बतलाना तथा अंत में राम द्वारा जैन धर्म की दीक्षा ग्रहण कर लेने का विवरण जैन रामकाव्यों की ही देन है।

संस्कृत के महाकवि कालिदास का रघुवंशम तो राम के सम्पूर्ण वंश का विवरण देने वाला काव्य है। मध्यकाल तक आते-आते रामकथा का जैन मुनियों द्वारा प्रचारित और जातकों में घड़ित रूप प्रचारित था। संस्कृत साहित्य की रामकथा समाज में सनातन पंथियों में व्याप्त अशिक्षा के कारण प्रचलन कम हो गया था। इसी समय तुलसीदास का उदय रामकथा के सनातन संस्कृत साहित्य में उल्लेखित रूप के विवेचन को समाज में लोकप्रिय करने का मार्ग प्रशस्त करता है। तुलसी पूर्व हिंदी अथवा भाषा में रामकथा का लेखन अथवा विवेचन पाप-तुल्य समझा गया था, अतः संस्कृतेतर उत्तर भारतीय भाषा अवधी और बृज में हिंदु कवियों ने रामकाव्य नहीं के बराबर किया था। विख्यात कवियों में एकमात्र चंद्रबरदाई का नाम आता है जिन्होंने पृथ्वीराज रासो के द्वितीय समय में रामकथा कही है जो दशावतारों के विवरण के क्रम में कही गई कथा है लेकिन जो कथा कही है वह संस्कृत साहित्य की रामकथाओं के अनुरूप ही कही है। वे इसे महाकाव्य रूप में लिखने का साहस नहीं जुटा पाए। चन्द्र के ही आसपास के एक कवि गोस्वामी विष्णुदास हुए थे जिन्होंने भाषा में रामकथा कहने का साहस जुटाया था लेकिन उसे केवल वाल्मीकि रामायण के भाषा में अनुवाद रूप में ही प्रस्तुत और प्रचारित किया था जिससे अधिक विरोध झेलने की जरूरत नहीं पड़ी। इनके बाद के ईश्वरदास की रचनाएँ भरत मिलाप और अंगद पेज सम्पूर्ण महाकाव्य न होकर खंडकाव्य रूप में प्रेषित किए गए अतः इन्हें रामकथा के भाषा लेखन की गुंजाइश का बीजरोपण के सफल प्रयास स्वरूप देखा जा सकता है। तुलसी के पूर्व रामकथा का समाज में व्याप्त रूप इसी प्रकार के भाषा अथवा राजस्थानी अपभ्रंश में लिखे गए अन्यान्य काव्यों में इर्दगिर्द घूमता रामकथानक प्रचलित रहा था। मेहाजी कृत रामकथा का स्वरूप ढूँढ़ाड़ और मत्स्य प्रदेश के आसपास के क्षेत्र में ही अधिक प्रचलित था (अडसठ तीरथ जो पुन न्हायौ, सुणो रामायण काने, पढियौ नै मेहो समझावे, ध्यायो धरम धियाने) तो सूर के सूरसागर के नवम स्कंध में आई रामकथा का स्वरूप उत्तर भारत में प्रचलित था। सूर सागर की रामकथा संस्कृत की रामकथा के निकट है और रामकृष्ण का अभेद स्वरूप प्रकट करने के लिए कही गई है क्योंकि माता दशोदा से सीताहरण की कथा सुनते ही कृष्ण का यह कहते हुए उठ खड़े होना “लखन धनुष दो” रामकृष्ण के एकत्व का ही अद्वितीय उदहारण है। इसके सामानांतर आज तक जैन मुनियों द्वारा अपभ्रंस में कही गई रामकथा का मनघडंत अथवा प्रक्षिप्त स्वरूप भी प्रचलित रहा था। तुलसी वे पहले पुरोधा हुए जिन्होंने रामकथा के विषय में समाज में व्याप्त कुरीतिपूर्ण अवधारणाओं का न केवल खंडन किया बल्कि सामना करते हुए एक ऐसे रामकाव्य की रचना की जो जन-जन की जिह्वा तक पहुँचा और आदरपूर्ण स्थान प्राप्त कर सका। इतना ही नहीं कालांतर में रामचरितमानस की प्रति घर में रखा जाना शुभ और सम्मान का विषय समझा जाने लगा। तुलसी के बाद भी तुलसी के दर्जे का रामकाव्य करने में किसी कवि को सफलता नहीं मिली।

महालेखाकार के लेखा और लेखाचक्र

आर. विश्वनाथन, व. लेखा अधिकारी



प्रत्येक राज्य में एक महालेखाकार होते हैं जो राज्य के लेखाओं के संकलन के लिए उत्तरदायी होते हैं। यह भारत के संविधान द्वारा दिए गए महालेखाकार के महत्वपूर्ण कार्यों में से एक है। राज्य सरकार का वार्षिक लेखा महालेखाकार द्वारा तैयार किया जाता है और भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक को इसके अनुमोदन के लिए प्रस्तुत किया जाता है। उसके बाद राज्य के राज्यपाल को प्रस्तुत किया जाता है जो उसे राज्य विधानसभा के समक्ष रखवाते हैं।

वित्तीय वर्ष के लिए बजट विधानसभा के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है, इस पर चर्चा की जाती है और पारित हो जाने पर यह संविधान के अनुच्छेद 204 और 205 के अनुसार विनियोग अधिनियम बन जाता है। उसी दिन जब राज्य विधानसभा में बजट पेश किया जाता है, बजट की एक प्रति अभिलेख के लिए महालेखाकार को भेजी जाती है। कोषागारों में आहरण एवं संवितरण अधिकारी और वेतन एवं लेखा अधिकारी के स्तर पर पारित हुए बजट के अनुसार विभिन्न मदों पर व्यय किया जाता है। कोषागार मासिक खातों का अनुपालन करता है और अगले महीने की 13 तारीख तक इन्हें महालेखाकार को सौंप देता है। उसी महीने की 25 तारीख तक महालेखाकार मासिक सिविल लेखा तैयार करते हैं और इसे वित्त सचिव को भेजते हैं। ज्यादातर अक्टूबर और फरवरी के महीने के दौरान राज्य सरकार पूरक बजट अनुमान देकर मूल बजट अनुमानों को बढ़ाती है, जिसकी प्रति अभिलेख के लिए महालेखाकार को भी भेजी जाती है।

मार्च के महीने के बाद, महालेखाकार के यहाँ वार्षिक खातों को अंतिम रूप दिया जाता है। संविधान के अनुच्छेद 149 के अनुसार, नियंत्रक और महालेखा परीक्षक से संबंध धारा 11 के साथ पठित, कर्तव्य, शक्तियाँ और सेवा की शर्तें अधिनियम 1971



के तहत नियंत्रक और महालेखापरीक्षक वार्षिक लेखा तैयार करते हैं। वार्षिक लेखा में वित्त लेखा और विनियोग लेखा शामिल हैं। वित्त लेखा, सामान्य खातों की लेखा परीक्षक की प्रस्तुति है। राजस्व और पूंजी खाते, सार्वजनिक ऋण और देनदारी तथा सरकारी वित्त खातों की परिसंपत्तियाँ द्वारा प्रकट वित्तीय परिणामों के साथ-साथ वर्ष के लिए प्राप्तियाँ और

आउटगोइंग दर्शाना दो खंडों में शामिल होता है। पहला खंड, संक्षिप्त विवरण करोड़ों में और दूसरा, विस्तृत विवरण लाखों में दर्शाया जाता है।

अंतिम बजट प्रावधान, उसके व्यय और अंतिम शेष को दर्शाने वाला एक विस्तृत विनियोग लेखा तैयार किया जाता है और स्वीकृति प्रमाण पत्र के लिए महालेखाकार के हस्ताक्षर के साथ सभी विभाग प्रमुखों को भेजा जाता है। इसके साथ ही महालेखाकार/लेखापरीक्षा भी हमारे सभी विवरणों और अनुदानों की जांच करते हैं, क्योंकि वे भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक को अनुमोदन के लिए प्रस्तुत करने से पहले खातों को प्रमाणित करते हैं। एक मसौदा वित्त लेखा और विनियोग लेखा भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक को अनुमोदन के लिए भेजा जाता है, इसके अनुमोदन पर खातों को राज्य सरकार के सरकारी प्रेस में मुद्रित किया जाता है। प्रत्येक पुस्तक की पांच रेक्सिन बाइंड प्रतियाँ भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक को उनके हस्ताक्षर के लिए भेजी जाती हैं। भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक के यहाँ से चार प्रतियाँ वापस लौटा दी जाती हैं। इसकी प्राप्ति पर तुरंत इसकी एक प्रति राज्य के राज्यपाल को दी जाती है, दो प्रतियाँ वित्त सचिव को और एक महालेखाकार द्वारा रखी जाती है। इसके बाद वित्त सचिव महालेखाकार को वह तारीख बताते हैं जिसको इसे राज्य के विधानमंडल के समक्ष रखा जाना है।



राज्य विधानमंडल में पेश होने तक यह एक गोपनीय दस्तावेज रहता है। राज्य सरकार से तिथि प्राप्त होने पर, वार्षिक लेखों की सॉफ्ट कॉपी राज्य विधानमंडल में रखने के लिए वित्त विभाग को सौंप दी जाती है। अतः बजट, जिसे वर्ष की शुरुआत में इसकी विधायी स्वीकृति मिली, वर्ष की समाप्ति के बाद विधानमंडल के वार्षिक लेखों के साथ प्रस्तुत किया जाता है।

सपना जो सच हुआ

जुलियट विमला बी, सहायक लेखा अधिकारी



पिछले दो-तीन वर्षों से मैं अपने माता-पिता को एक विदेशी यात्रा पर ले जाना चाहती थी। वे कभी हवाई जहाज में नहीं गए इसलिए पहले तो वे जाने से झिझक रहे थे। बहुत विनती के बाद वे विदेश यात्रा के लिए राजी हो गए। पांच दिनों के लिए मैंने ने दुबई की यात्रा की योजना बनाई। मेरा परिवार, बहन, जीजू, मम्मी और पापा, हम सात लोग थे। हमने यात्रा से एक हफ्ते पहले पैकिंग कर ली। हेंड लगेज में मैंने मेरे माता-पिता के लिए शॉल-कोर्ट ले ली ताकि जहाज में उन्हें अगर ठंड लगी तो काम आ सके। हमारी उड़ान 15 जुलाई को सुबह 7 बजे थी। हम सुबह 4:30 बजे हवाई अड्डे पर पहुँचे। प्रवेश से लेकर हवाई जहाज तक मैंने अपने माता-पिता के लिए व्हीलचेयर की व्यवस्था की थी। हमने आव्रजन संबंधी औपचारिकताएँ पूरी कीं। मेरे माता-पिता एयरपोर्ट में सुरक्षा व्यवस्था को देखकर दंग रह गए। सुबह साढ़े छह बजे बोर्डिंग शुरू हुई। व्हीलचेयर में व्यक्तियों को प्राथमिकता दी गई।

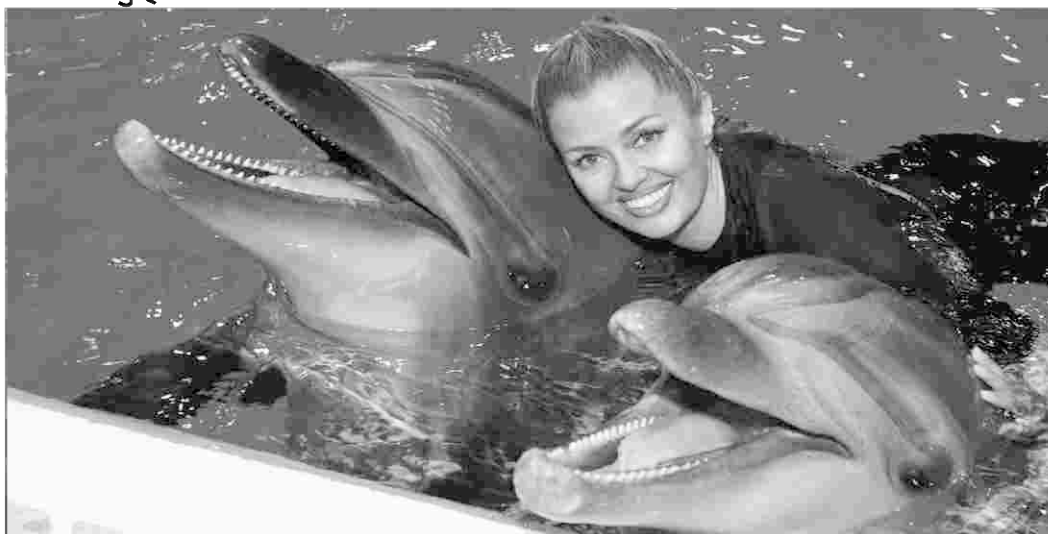
सुबह 10 बजे के आसपास हम दुबई में उतरे। दुबई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा दुनिया के सबसे बड़े हवाई अड्डों में से एक है। कुछ देर बाद हम होटल गए। हम बुर्ज-विस्टा आवासीय अपार्टमेंट में ठहरे थे, जिसमें 3 बेडरूम, डाइनिंग और किचन था। हमने अपार्टमेंट में दोपहर के भोजन का ऑर्डर किया और खाने के बाद हमने आराम किया। शाम 5:00 बजे हम डॉल्फिन शो के लिए गए। हमने क्रीक पार्क में दुबई डॉल्फिनारियम डॉल्फिन और सील शो देखा। दुबई में एकमात्र पूरी तरह से वातानुकूलित डॉल्फिनैरियम, यह पांच ब्लैक डॉल्फिन और चार सीलों का घर है। शो के दौरान, सील और डॉल्फिन चरम बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन कर एथलेटिक करतब करती हैं।

‘सैर कर दुनिया की गाफिल ज़िंदगानी फिर कहाँ

ज़िंदगी गर कुछ रही तो नौजवानी फिर कहाँ

खवाजा मीर दर्द का ये शेर संसार के आजीवन घुम्मकड़ तपस्वी श्री ‘राहुल सांकृत्यायन’ ने भी अपने घुमक्कड़ जीवन को बल देने के लिए प्रयुक्त किया है तथा जीवन में पर्यटन को अपनाने का संदेश दिया है। इसी से प्रभावित यह आलेख दुबई शहर की विशेष जानकारी देता है जिसकी प्रस्तुति बड़ी रोचक है और साहित्यिक रस प्रदान करती है। यह आलेख पाठकों को दुबई पर्यटन से जुड़ी जानकारी से लाभान्वित करेगा।

-संपादक



डॉल्फिन शो के बाद हमने क्रीक पार्क बर्ड शो देखा। यह शो विशिष्ट प्रजातियों के सबसे अनोखे और अद्भुत पक्षियों में से एक है क्योंकि वे करतब दिखाते हैं। हम उनकी प्रतिभा और कौशल से चकित थे। पक्षी ऊपर की ओर उड़ते हैं और दर्शकों के साथ बातचीत करते हैं। शो के बाद, हम अपार्टमेंट लौट आए और रात के खाने का ऑर्डर दिया। दूसरे दिन का हमारा कार्यक्रम था- आधे दिन का शहर भ्रमण और दोपहर रेगिस्तान सफारी। हमारे 5 घंटे का दुबई टूर जो 9 बजे शुरू हुआ, हमें दुबई के प्रमुख स्थानों को देखने को मिला। अल फहीदी किले में स्थित दुबई संग्रहालय से शुरुआत हुआ। फिर हम जुमेराह मस्जिद गए, जो दुबई की एकमात्र मस्जिद है जो गैर-मुसलमानों के लिए खुली है। हम होटल बुर्ज अल अरब (जो एक पाल के आकार में बनाया गया है), पाम द्वीप (दुनिया का सबसे बड़ा कृत्रिम द्वीप), होटल अटलांटिस द पाम (पाम जुमेराह की ताज की महिमा), जुमेराह बीच पर भी गए। शेख जायद रोड के साथ एक ड्राइव शामिल था ताकि हम सड़क के दोनों किनारों पर गगनचुंबी इमारतों और शानदार इमारतों को देख सकें। इस शहर के दौरे में दुबई शहर के सबसे महत्वपूर्ण स्थानों को देखने को मिला। 2 बजे अपार्टमेंट वापस लौटे। दोपहर के भोजन के बाद हमने 2 घंटे आराम किया। शाम चार बजे वाहन हमें डेजर्ट सफारी पर ले जाने के लिए आया। रेगिस्तान तक पहुँचने में एक घंटा लगा। हम डेजर्ट सफारी के लिए गए।



ऊंट की सवारी, बाइक राइड और मेंहदी पेंटिंग सहित अन्य कई मजेदार गतिविधियाँ उपलब्ध थी। चारों ओर देखने और तस्वीरें लेने के लिए हमने समय निकाला। सूर्यास्त के दौरान रेगिस्तान के लुभावने दृश्य देखे लायक था। हमने स्वादिष्ट बारबेक्यू डिनर का आनंद लेते हुए तारों के नीचे बेली डांसिंग, फायर शो और तनुरा शोके साथ हमारा दूसरा दिन समाप्त हो गया। अपार्टमेंट में लौटते समय मेरी माँ ने मुझे बताया कि उन्होंने बिजली के ओवरहेड तार, कूड़ेदान और ड्रेनेज नहीं देखे। मम्मी ने उस देश की स्वच्छता और अनुशासन की सराहना की।

तीसरे दिन: हम बुर्ज खलीफा गए। हमारा अपार्टमेंट जो बुर्ज खलीफा के ठीक सामने था, उसमें 64 मंजिलें थीं। हम 27वीं मंजिल पर रुके थे। हमारे अपार्टमेंट की दूसरी मंजिल से दुबई मॉल जाने का रास्ता था। हम अपने अपार्टमेंट की दूसरी मंजिल से दुबई मॉल (दुनिया का

सबसे बड़ा मॉल) जा सकते थे। बुर्ज खलीफा जाने के लिए दुबई मॉल से ही जा सकते हैं। दुनिया की सबसे ऊंची गगनचुंबी इमारत है। बुर्ज खलीफा में 163 मंजिल हैं, लेकिन लोगों को 124 वीं मंजिल तक जाने की अनुमति है। इसे एट द टॉप कहा जाता है। लिफ्ट को 124वीं मंजिल तक पहुंचने में केवल 60 सेकंड का समय लगता है। बुर्ज खलीफा के 124वीं मंजिल से दुबई का दृश्य अद्भुत था। कोई भी वहां से मीलों दूर तक देख सकता है। मैंने बुर्ज-अल-अरब, विश्व द्वीप और वहां से शेख जायद रोड का आकर्षक दृश्य देखा। हमें पूरे दुबई का नजारा देखने को मिला जो बहुत ही खूबसूरत था। बुर्ज खलीफा देखने के बाद, दुबई मॉल गए। सीधे दुबई मॉल फूड कोर्ट गए और हमने लंच किया था। दुनिया का सबसे बड़ा मॉल देखने के लिए, हमने अपने माता-पिता के लिए व्हीलचेयर लिए। मॉल देखने के लिए दो घंटे काफी नहीं थे। दुबई मॉल के ग्राउंड लेवल पर स्थित 10 मिलियन लीटर का दुबई एक्वेरियम टैंक, दुनिया के सबसे बड़े विशेष एक्वेरियम में से एक है। इसमें हजारों जलीय जानवर हैं, जिनमें 140 से अधिक प्रजातियाँ शामिल हैं। 48-मीटर लंबी सुरंग जो विशाल एक्वेरियम के 270 डिग्री के शानदार लुभावने दृश्य दिखाती है। शाम को हम 6.00 बजे अपार्टमेंट लौटे।

चौथा दिन: नाश्ते के बाद हम दुबई फ्रेम में गए। कांच, स्टील और एल्युमीनियम से निर्मित 50 मंजिला संरचना को इस तरह से स्थापित किया गया है कि एक तरफ से देखने पर आधुनिक दुबई के लैंडमार्क और दूसरी तरफ से शहर के पुराने हिस्सों को देखा जा सके। यह दुनिया में सबसे बड़े फ्रेम का रिकॉर्ड रखता है। इमारत की ऊंचाई 150.24 मीटर और चौड़ाई 95.53 मीटर है। शाम को हम मरीना ड्राइव के लिए गए। दुबई मरीना से इस शानदार निजी नाव यात्रा से दुबई के कुछ अद्भुत प्रभावशाली स्थलों को हमने देखा। क्रूज में केवल 7 लोग ही यात्रा का सकते हैं। रात को हम 9.00 बजे अपार्टमेंट लौटे।

पाँचवें दिन: नाश्ते के बाद हम गोल्ड सौक गए। दुबई की गोल्ड मार्केट में दुनिया के बेहतरीन सोने के गहनों के डिजाइन्स मिल जाएंगे। यहां के सोने की चमक देखकर मैं हैरान हो गई। इतना चमकदार सोना आपको कहीं नहीं मिलेगा। माँ को विश्वास ही नहीं हो रहा था कि बाजार में आम सामान की तरह सोना प्रदर्शित किया गया था! दुबई में गोल्ड मार्केट के अलावा कई और ऐसे बाजार हैं जहाँ आप पैसे खर्च करने से खुद को रोक नहीं सकते। स्पाइस मार्केट सोने की ही नहीं बल्कि दुबई के मसालों वाले बाजार की भी विश्व में अलग पहचान है। यहाँ हर तरह के परंपरिक मसाले मिल जाएंगे। इसके अलावा आपको यहां ड्राई फ्रूट्स की भी कई क्वालिटी देखने को मिलेगी। हमने अपने लिए और अपने दोस्तों, रिश्तेदारों को उपहार में देने के लिए ड्राई फ्रूट्स खरीदे। कुल मिलाकर, हमने दुबई को बस अत्यधिक आधुनिक और देखने लायक जगह पाया। बड़ी-बड़ी इमारतें इमारतें, लंबी चौड़ी सड़के, हर जगह स्वच्छता; सब बहुत अच्छा लगा। 19 तारीख की शाम को हमारी वापसी उड़ान थी। हम घर पहुंचे, मेरे माता-पिता बहुत खुश थे। सबसे बढ़कर मैं खुश थी कि हम सुरक्षित पहुंच गए। अगली सुबह मेरे पिता, जो एक सेवानिवृत्त वायु सेना अधिकारी हैं, उन्होंने मुझे चेक दिया और मुझे और मेरी बहन को आशीर्वाद दिया। मेरे पिता हमेशा कहते हैं: 'जब कभी आप किसी को आशीष दें तो वह आपके जेब से होकर गुजरनी जानी चाहिए।' इस प्रकार मेरा एक छोटा सा सपना आखिरकार सच हो गया।

धरती को बचाओ

सी. अनुराधा, सहायक लेखा अधिकारी



पृथ्वी और उसके संसाधन, जीवन को पृथ्वी पर संभव बनाते हैं। अगर हम इन संसाधनों के बिना अपने जीवन की कल्पना करें, तो यह संभव नहीं होगी। जैसे धूप, हवा, वनस्पति और पानी के बिना जीवन नहीं चल सकता, इन्हें यदि हम बचाना शुरू नहीं करते हैं तो जल्द ही यह हकीकत में बदल जाएगा कि पृथ्वी पर कभी जीवन हुआ करता था। पृथ्वी हमें जो संसाधन प्रदान करती है वह सीमित है।

वे आशीर्वाद हैं जिनकी हम गणना नहीं करते हैं। मनुष्य स्वार्थी हो गया है और पृथ्वी के संसाधनों का तेजी से उपयोग कर रहा है। हमें अपने जीवन की रक्षा के लिए उनकी रक्षा करने की आवश्यकता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि मनुष्य और सभी जीवित जीव अपने अस्तित्व के लिए पृथ्वी पर निर्भर हैं। लालच और स्वार्थ से प्रेरित मनुष्यों की सभी गतिविधियों ने पृथ्वी को अत्यधिक नुकसान पहुँचाया है। इन गतिविधियों के कारण लगभग सभी



प्राकृतिक संसाधन अब प्रदूषित हो रहे हैं। जब ये सभी संसाधन खतरे में होंगे, तो स्वाभाविक रूप से सभी जीवों का जीवन संकट में पड़ जाएगा। इसलिए हमें हरहाल में धरती को बचाना है।

पृथ्वी को बचाने के लिए हर कोई निम्नलिखित छोटे-छोटे कदम उठा सकता है-

» बुद्धिमानी से खरीदारी करें। कम प्लास्टिक खरीदें और एक रोज काम आने वाला शॉपिंग बैग लाएँ। घर पर भी प्लास्टिक की जगह कांच और मेटल कंटेनर का इस्तेमाल करें।

» हमें पानी बर्बाद नहीं करना चाहिए। हमें अपने जल निकायों में कचरा फेंक कर उसे प्रदूषित नहीं करना चाहिए। हमारे महासागरों और नदियों में रसायन न छोड़ें। घर और ऑफिस में नॉन-टॉक्सिक केमिकल्स चुनें। पानी को बचाना सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि यह तेजी से खत्म हो रहा है। लोगों को वर्षा जल संरक्षण में ध्यान देना चाहिए। आरओ में जब 4 लीटर पानी डाला जाता है तब वो 1 लीटर पीने योग्य पानी देता है। यानी एक गिलास के लिए तीन बर्बाद। थोड़ा सा प्रयास करके आप इस पानी को बचा सकते हैं। इसे बर्तन धोने, कपड़े धोने, पौधों में डालने घर की सफाई करने आदि में काम ले सकते हैं।

» अन्न की बर्बादी न करें- अन्न की बर्बादी सिर्फ अन्न की नहीं होती, उसके साथ करोड़ों लीटर पानी, तेल और उर्जा भी बर्बाद हो जाती है। घर हो या बाहर, पैसे का हो या मुफ्त का, खाना उतना ही लें जितना आसानी से खत्म कर सकें।

» हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए, हमें लोगों को पेड़ काटने से रोकना चाहिए क्योंकि पेड़, भोजन और ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। वे ऊर्जा बचाने, हवा को साफ करने और जलवायु परिवर्तन से निपटने क्षमता रखते हैं।

» स्कूटर, बाइक, गाड़ी जैसे वाहन पेट्रोलियम से चलते हैं। पेट्रोलियम एक प्राकृतिक संसाधन है जिसका दोहन करने से हमें बचना चाहिए। इसके साथ ही पेट्रोलियम के जलने से पर्यावरण प्रदूषित होता है इसीलिए ज्यादा से ज्यादा सीएनजी और विद्युत चलित वाहनों का ही इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

» किसी भी सामाजिक समारोह के दौरान डिस्पोजल प्लेट के बजाय पत्तल या फिर स्टील के बर्तनों का इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

» लंबे समय तक चलने वाले और कम उर्जा खपत करने वाले प्रकाश बल्बों का प्रयोग करें। ऊर्जा कुशल प्रकाश बल्ब ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करते हैं। जब आप कमरे से बाहर निकलें तो लाइट स्विच को भी बंद कर दें।

» लोगों को पर्यावरण को प्रदूषित न करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। हम लोगों को पृथ्वी को न बचाने के दुष्परिणामों से अवगत करा सकते हैं। उन्हें तरीके सिखाए जा सकते हैं और वे पृथ्वी को बचाने में कैसे योगदान दे सकते हैं। दूसरों को हमारे प्राकृतिक संसाधनों के महत्व और मूल्य को समझाने में मदद कर सकते हैं।

यदि यह सब सामूहिक प्रयास होने लगे तो हम निश्चित रूप से अपने ग्रह पृथ्वी को बचा सकते हैं और पृथ्वी को उज्ज्वल बना सकते हैं। पर्यावरण प्रोजेक्ट के अन्तर्गत पृथ्वी को बचाने के लिए 1970 से हर साल 22 अप्रैल को मनाया जाने वाला दिन पृथ्वी दिवस है। इस प्रोजेक्ट को शुरू करने का उद्देश्य लोगों को स्वस्थ वातावरण में रहने के लिए प्रोत्साहित करना है। पृथ्वी हमारी माता है, जो हमें हमारे जीवन



के लिए आवश्यक सभी वस्तुएं देती है। इसलिए हम इसकी प्राकृतिक गुणवत्ता और हरे-भरे वातावरण को बनाए रखने के लिए भी जिम्मेदार हैं। हमें छोटे लाभों के लिए इसके प्राकृतिक संसाधनों को बर्बाद और प्रदूषित नहीं करना चाहिए। पृथ्वी के बिना पूरे ब्रह्मांड में कहीं भी जीवन संभव नहीं है। मानव की प्राकृतिक संसाधनों का विनाश करने वाली गतिविधियाँ पृथ्वी के वातावरण को बहुत बुरी तरह से प्रभावित कर रही हैं। इसलिए यह हमारी स्वयं की जिम्मेदारी है कि हम पर्यावरण के अनुकूल गतिविधियों को अपनाकर पृथ्वी को बचाएं। सरकार द्वारा भी समय-समय पर पर्यावरण को सुरक्षित करने के लिए कई अभियान चलाए गए हैं। हमारे प्रधानमंत्री द्वारा नवाचार किया गया स्वच्छ भारत अभियान इन सब में प्रमुख है। इस योजना की शुरुआत 2 अक्टूबर 2014 को हुई थी। इस योजना का मकसद भारत को पूरी तरह से साफ़ सुथरा बनाना और हमारे पर्यावरण को सुरक्षित रखना।

बच्चों पर इंटरनेट का प्रभाव

पी. गणेश, लेखाकार



सोशल मीडिया काफी तेजी से बढ़ रहा है और इसमें बच्चों की मौजूदगी रफ्तार पकड़ रही है। बच्चे छोटी उम्र से ही स्मार्टफोन के आदी होते जा रहे हैं और अपना अधिक समय इनके साथ बिताना पसंद कर रहे हैं। सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभाव इस प्रकार हैं-

» बच्चों द्वारा सोशल मीडिया का उपयोग करने का पहला फायदा है कि इस प्लेटफॉर्म के जरिए उन्हें असीमित सूचना का भंडार प्राप्त होता है। इसके माध्यम से बच्चे पढ़ाई के साथ-साथ अन्य गतिविधियों के बारे में भी ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

» आज कल माता-पिता को बच्चों का होमवर्क कराने की फुर्सत नहीं मिल पाती है। ऐसे में बच्चा सोशल मीडिया की मदद से अपना होमवर्क कर सकता है।

» कोरोना काल में सोशल मीडिया के जरिए बच्चों को पढ़ाया गया। इसके अलावा, बच्चे मैसेज के माध्यम से भी शिक्षकों से अपनी शंकाएँ दूर कर सकते हैं।

» सोशल मीडिया बच्चों के लिए एक मंच प्रदान करता है, जहाँ बच्चे अपनी रुचि के अनुसार नई-नई चीजों को सीख सकते हैं, जैसे- संगीत, कला, खेल आदि।

» सोशल मीडिया के माध्यम से बच्चे देश-विदेश में होने वाली घटनाओं से भी रूबरू हो सकते हैं और उनका ज्ञान बढ़ सकता है।

» कोरोना काल में सोशल मीडिया ही मनोरंजन का एकमात्र साधन था।

सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव-

» सोशल मीडिया का अधिक उपयोग बच्चों की मानसिक स्थिति पर बुरा प्रभाव डालता है।

» सोशल मीडिया के अधिक उपयोग से बच्चों की नींद पूरी नहीं हो पाती है और बच्चों की पढ़ाई-लिखाई प्रभावित होती है। अधिकांश समय सोशल मीडिया पर बिताने से उन्हें इसकी लत लग जाती है जिसका असर बच्चों की दिनचर्या पर पड़ता है।

» यह बच्चों में हिंसा को भी बढ़ावा देता है। इससे बात-बात पर क्रोध और बेवजह का चिड़चिड़ापन आता है। इससे मानसिक विकास के साथ साथ शारीरिक विकास भी अवरुद्ध होता है और समय का दुरुपयोग होता है।

नकारात्मक प्रभावों से बचने के लिए ध्यान रखने योग्य बातें-

» सोशल मीडिया पर समय बिताने के लिए बच्चों की समय सीमा को निर्धारित करें। साथ उन्हें सोशल मीडिया का उपयोग करने के लिए ऐसा समय दें, जिससे उनकी पढ़ाई, नींद, भोजन जैसी जरूरी चीजें बाधित न हो।

» अगर बड़े बच्चे का फेसबुक जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर अकाउंट्स हैं, तो नियमित रूप से उन अकाउंट्स को चेक करते रहें। सोशल मीडिया की गलत आदतों के बारे में बच्चों को जरूर बताएँ ताकि वे इससे दूरी बनाकर रखें।

» दोस्तों से बात करने के लिए सोशल मीडिया की जगह बच्चों को प्रोत्साहित करें कि वह उनके पास जाएँ और बातें करें।

‘रामकथा सुरधेनु सम’

सुभाष चंद यादव, हिंदी अधिकारी



ईश्वर के नाम के स्मरण पर विचारकों और संतों का सदा से विशेष जोर रहा है। उपनिषद् और अन्य धार्मिक ग्रन्थ भी इसी विचार को प्रस्तुत करता है। जब-जब मानवसमाज और मानव जीवन खतरे में हो अथवा धर्म का क्षरण चरम पर हो तो प्रभु किसी न किसी रूप में प्रकट होते हैं उसी यशोगान से प्रभु का स्मरण करना भक्तों का भाव रहता है। ईश्वर के प्रगट जीवन चरितों और उनके गुणों का बखान अलग-अलग तरीके से किया गया है अतः रामकथा नामक हरिगाथा को भी भक्तों ने प्रभु का लीलागान बतलाकर अलग-अलग तरीके से गाया है। अब तक इतने अवतार हुए हैं कि उन सब के चरित्र का गान किया जाए तो अनेक कल्प लग जाएँगे लेकिन प्रभुगाथा और यशोगान पूर्ण नहीं हो पाएगा। हरि के विविध अवतारों का यशोगान अलग-अलग है लेकिन अंतिम रूप से वो परब्रह्म (राम) का ही भजन कर रहे होते हैं-

हरि अनंत हरि कथा अनंता। कहहिं सुनहिं बहुबिधि सब संता॥

रामचंद्र के चरित सुहाए। कल्प कोटि लागि जाहिं न गाए॥ मानस/1/139/चौ.3

वस्तुतः रामगाथा लोककल्याण में जिए एक महान व्यक्तित्व का गान है जो सृष्टि में अनुपम ध्वनि-नाद क्षमता से संपन्न है। उसका ध्यानमात्र जीव की मनोदशा और सामाजिक स्थिति को उन्नत दशा की तरफ उन्मुख कर देता है। राम का ध्यान सृष्टि की अगोचर प्राकृतिक शक्तियों को उत्प्रेरित करता है और जीव को सदोन्मुख करता है। चूँकि दुख व्यक्ति के पुरुषार्थ को जगाकर जीवन को गति प्रदान करता है। रामकथा पुरुषार्थ को जगाने वाली मानवता की परिक्रमा है और साथ ही कर्म, त्याग और भक्ति की त्रिवेणी भी है। राम जीवन को उच्च से उच्चतम स्तर पर उठाकर इसे सुंदर से सुंदरतम बनाते हैं।

मानस में शिवजी कहते हैं कि हे पार्वती! जिनकी कृपा से सब प्रकार का संशय और भ्रम मिट जाता है, वही कृपालु रघुनाथ हैं। जिनका आदि अंत किसी ने नहीं पाया। वेदों ने अपनी बुद्धि से अनुमान करके इस प्रकार बताया है कि वह ब्रह्म बिना ही पैर के चलता है, बिना कान के ही सुनता है, बिना ही हाथ के नाना प्रकार के काम करता है, बिना मुँह के ही सभी रसों का आनंद लेता है और बिना वाणी के ही अनन्य वक्ता है। जिसका वेद और महर्षि वर्णन करते हैं तथा मुनि जिसका ध्यान धरते हैं, वही दशरथनंदन, भक्तों के हितकारी, अयोध्या के स्वामी भगवान राम हैं।

जेहि इमि गावहिं बेद बुध जाहि धरहिं मुनि ध्यान।
सोइ दसरथ सुत भगत हित कोसलपति भगवान॥

तुलसीदासजी ने रामगाथा के प्रभाव को यह कहकर व्यक्त किया है-

‘बरनउ रघुबर बिमल जसु जो दायक फल चारि’।

सम्पूर्ण रामकथा रामयुग के विशद लोक अनुभव, धार्मिक विचारधारा, पुरुषार्थ, गहन सामाजिक अनुभूति और जनजीवन का प्रतिबिम्ब हैं जो भाषा में ढलाई किया हुए उन्नत शिल्प का अद्वितीय उदहारण है। जिस प्रकार प्रचलित है कि ‘हरि अनंत हरिकथा अनंता’ उसी प्रकार यह कहना भी उतना ही सारगर्भित है कि राम नाम में एक नाद शक्ति है और वही नादशक्ति राम गुणगान में निहित है क्योंकि शिवजी कहते हैं ‘राम अनादि अवधपति सोई’ इसलिए रामजी का यशोगान सुख के महामन्त्र में निरूपित हो जाता है अतः श्रीरामचरितमानस रूपी सम्पूर्ण भगवद्गाथा एक चमत्कारिक प्रभाव छोड़ने वाला ग्रन्थ है अर्थात् सम्पूर्ण मनोरथ पूरे करने वाली कामधेनु सी उपकारी है।

और बालकाण्ड में कहा है 'रामकथा कलि मल हरनि मंगल करनि सुहाइ' फिर एक जगह बालकाण्ड में कहा गया है 'बरनउँ रघुबर बिसद जसु सुनि कलि कलुष नसाइ'।

श्रीराम संसार को मार्ग बताने वाले व्यक्तित्व हैं। उनका जन्म नकारात्मक शक्तियों के उन्मूलन के लिए हुआ था। राम ने आरंभ में दुखों का वरण किया ताकि प्रजा सुखी रहे। उनसे दूसरों का दुख नहीं देखा गया तो उन्होंने वनवास का वरण किया। जहाँ उन्होंने रावन नामक पेंतरेबाज और यातनादायी सत्ता का मार्ग अवरुद्ध किया तथा वनवासियों के जीवन स्तर को मानवाधिकारों के स्तर तक उन्नत किया जिनकी उन्नति में रावन नामक निरंकुश और हाहाकारी सत्ता प्रमुख बाधा बनी हुई थी। रावन प्रणेता है लूट-खसोट और राक्षसी चिंतनधारा का, जिसके जहाँ मानवजीवन और दबे-कुचले असंगठित जीवन का कोई मोल नहीं था और उनके धार्मिक अधिकारों का कोई रक्षक नहीं था। वहाँ सत्य वही था जो रावन सत्ता उद्घोषित करती थी, वहाँ कानून वही है जो रावन के हित में था। वनवासियों की आबरू का कोई महत्व नहीं था रावनसत्ता में। सीताहरण वन्यजीवन में नारीजीवन की घोर असुरक्षित अवस्था को उजागर करता है। नारीहरण वन और रावनसत्ता में एक सामान्य घटना थी। राम अपने युग के प्रथम पुरुष हैं जिन्होंने नारी रक्षा के लिए वानरों और वनवासियों को संगठित कर नारी जीवन के मोल और उसकी संप्रभुता का सम्मान करने का विचार प्रवाहित कर एक स्थापित, अहंकारपूर्ण, निरंकुश, दुर्गम और दुर्जेय सत्ता को धराशाही किया। इसीलिए तुलसीदासजी श्रीरामजस को वो सत्संग कहते हैं जिससे प्राप्त सुख की कोई तुलना नहीं है। स्वर्ग और मोक्ष के सब सुखों को तराजू के एक पलड़े में रखा जाए, तो भी वे सब मिलकर दूसरे पलड़े पर रखे हुए सुख के बराबर नहीं हो सकते, जो क्षण मात्र के राम-भजन (सत्संग) से प्राप्त होता है-



तात स्वर्ग अपबर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग।

तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग॥ (मानस/5/दोहा-4)

राम का सुंदर यश कलियुग के पापों का नाश करने वाला, संशय का शमन करने वाला और सुख का मूल है जो लोग इसे आदरपूर्वक सुनते हैं, उन पर राम प्रसन्न रहते हैं-

कलिमल समन दमन मन राम सुजस सुखमूल।

सादर सुनहिं जे तिन्ह पर राम रहहिं अनुकूल॥ [मानस/3/दो.6(क)]

सम्पूर्ण भगवद्गाथा एक चमत्कारिक प्रभाव छोड़ने वाला उपाय है। यह महामंत्र है। इसी महामंत्र को शिवजी जपते रहते हैं जिसके प्रभाव से उनके गले में धारण किया हुआ कालकूट विष भी उनके लिए अमृत बना हुआ है और उनकी तपोस्थली काशी को मुक्तिदायनी की शक्ति प्राप्त हुई है। तभी तुलसी कहते हैं-

सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान।

सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु बिना जलजान॥ (मानस/5/दो.60)

वो श्री रघुवीर का नाम ही है जिसके प्रभाव से पानी में पाषाण भी तैर जाता है। पत्थर और पानी की प्रकृति विरुद्ध है लेकिन राम नाम का प्रभाव उस विरुद्ध स्वभाव में भी सामंजस्य बिठाने में सक्षम है और पत्थर का भी पानी में तैरना संभव हो पाता है। ऐसे राम के नाम को छोड़कर यदि कोई किसी और का स्मरण या वंदन करता है तो वो मतिमंद अर्थात् मूर्ख ही कहा जा सकता है-

श्री रघुबीर प्रताप ते सिंधु तरे पाषाण।

ते मतिमंद जे राम तजि भजहिं जाइ प्रभु आन॥ (मानस/5/दो.3)

इसी महत्व के कारण कहा गया है कि नाम महिमा में संसार में जितनी भी नाम शक्तियों का शोध हुआ है अथवा श्रुति अर्थात् वेद अथवा धर्म-ग्रंथों ने एक से बढ़ाकर एक नाम गिने हैं लेकिन उनमें से राम का नाम ही सर्वाधिक शक्तिशाली, सम्पूर्ण कल्याण का हेतु है अतः वही स्मरणीय है-

जद्यपि प्रभु के नाम अनेका। श्रुति कह अधिक एक तैं एका॥

राम सकल नामन्ह ते अधिका। होउ नाथ अघ खग गन बधिका॥ (मानस/3/41/चौ.4)

राम अनादि है और वे ही अवध के स्वामी के रूप में प्रकट हुए हैं अतः उनका कथारूपी जसगान का वेद व वेदज्ञ अनेक प्रकार से वर्णन करते हैं, मुनि जिसका ध्यान धरते हैं, वही दशरथनंदन, भक्तों के हितकारी, अयोध्या के स्वामी भगवान राम रूप में प्रगट हुए हैं। प्रभु राम रघुनाथजी का चरित्र बड़ा ही विचित्र है, उसको पहुँचे हुए जानीजन ही तत्व से समझ पाते हैं। जो मंदबुद्धि हैं, वे तो विशेष रूप से मोह के वश होकर हृदय में कुछ दूसरी बात ही समझ बैठते हैं।

राम की कथा हाथ की सुंदर ताली है जो संदेह दूर कर देती है। इसे आदर से सुनो। हर्ष, शोक, ज्ञान, अज्ञान और अभिमान- ये सब जीव के धर्म हैं। राम तो व्यापक ब्रह्म, परमानंदस्वरूप, परात्पर प्रभु और पुराण पुरुष हैं। इस बात को सारा जगत जानता है। यह जगत प्रकाश्य है और राम इसके प्रकाशक हैं। वे माया के स्वामी और



ज्ञान तथा गुणों के धाम हैं। जिनकी सत्ता से, मोह की सहायता पाकर जड़ माया भी सत्य-सी भासित होती है। राम की कथा कलियुग के पापों को हरने वाली, कल्याण करने वाली और बड़ी सुंदर है॥ [रामकथा कलि मल हरनि मंगल करनि सुहाइ॥] राम की कथा कामधेनु के समान सेवा करने से सब सुखों को देने वाली है, और सत्पुरुषों के समाज ही सब देवताओं के लोक हैं, ऐसा जानकर इसे कौन न सुनेगा-

रामकथा सुरधेनु सम सेवत सब सुख दानि।

सतसमाज सुरलोक सब को न सुनै अस जानि॥ मानस/1/113



हिंदी पखवाड़ा 2022: की झलकियाँ



हिंदी पखवाड़ा 2022: मंच प्रस्तुति का आनंद लेते हुए उच्च प्राधिकारी



हिंदी पखवाड़ा 2022: मंत्रमुग्ध श्रौतागण



हिंदी पखवाड़ा 2022: वंदना करते हुए मंच



हिंदी पखवाडा 2022, उद्घाटन समारोह: मंच संचालन करती हुई सुश्री दीपा सिंह



हिंदी पखवाडा 2022, उद्घाटन समारोह: मंच प्रस्तुति



हिंदी पखवाडा 2022, उद्घाटन समारोह: गीत प्रस्तुत करते हुए अधिकारी



हिंदी पखवाडा 2022, उद्घाटन समारोह: परितोषिक वितरण करते हुए व.उपमहालेखाकारजी



हिंदी पखवाड़ा 2022: निबंध स्पर्धा के निर्णायक श्री एम. सुधाकरन



हिंदी पखवाड़ा 2022, स्पर्धा आयोजन की एक झलकी



हिंदी पखवाड़ा 2022, मोनो एक्टिंग प्रस्तुत करते हुए अधिकारी



हिंदी पखवाड़ा 2022, प्रतियोगिता के पश्चात प्रसन्न मुद्रा में प्रतिभागी



हिंदी पखवाड़ा 2022: स्पर्धा का आयोजन करते हुए श्रीमती लक्ष्मी जी, स. लेखाधिकारी



हिंदी पखवाड़ा 2022, उद्घाटन समारोह के लिए रंगोली तैयार करते हुए



हिंदी पखवाड़ा 2022, किज़ स्पर्धा का आयोजन करते हुए श्री विश्वनाथन सर



हिंदी पखवाड़ा 2022, स्मृति परीक्षा प्रतियोगिता के आयोजन की एक झलक

आजादी की लड़ाई के गुमनाम सिपाही

मंजू मोनिषा डी. [पुत्री श्री एन. दिनकरन, व. उपमहालेखाकार/प्र.]



आजादी जिसका हम आज आनंद माना रहे हैं, यह अनेक स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान से संभव हो सका है जिनमें से बहुत से सिपाही वतन की मिट्टी में मिल गए, कुछ के नाम ज्ञात हैं तो बहुत से आज भी गुमनाम हैं। यहाँ प्रस्तुत हैं उन गुमनाम सिपाहियों में से कुछ की खास जानकारी जो लोक प्रसिद्धि प्राप्त करने के अधिकारी हैं।

इनमें से प्रथम हैं रानी वेलुनचियार जो शिवगंगा (आधुनिक तमिलनाडु, भारत) की रानी थीं। वह पहली रानी थी जिन्होंने भारत में ब्रिटिश सत्त के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। उनका जन्म 3 जनवरी 1730 में शिवगंगई, तमिलनाडु के रामनाथपुरम जिले में हुआ। उनका जन्म रामनाथ साम्राज्य के राजा चेल्लामुथु विजयरागुनाथ सेतुपति और रानी सकंधिमुथल के घर में एकलौती संतान के रूप में हुआ था। राजकुमारी को एक राजकुमार के रूप में शिक्षा दीक्षा दी गई और पालन-पोषण किया गया। उन्हें युद्ध कौशल और अस्त्र संचालन का प्रशिक्षण दिया गया। वे तीरंदाजी, घुड़सवारी, लाठीबाजी और भालाफेंक जैसी युद्धकला में पारंगत थीं। उनका अंग्रेजी, फ्रेंच, उर्दू सहित अनेक भाषाओं पर भी अधिकार था।



16 वर्ष की अवस्था में वेलुनाचियार के पिता ने उनका विवाह शिवगंगा के महाराज शशिवर्मा थेवर के बेटे मुथुवेदुंगानाथ थेवर के साथ कर दिया जो 1750 में शिवगंगा के शासक बने। उनके एक पुत्री हुई जिसका नाम वेल्लाचची रखा गया। 1772 में अंकोट के नवाब के साथ मिलकर ईस्ट इंडिया कंपनी ने शिवगंगा राज्य पर आक्रमण किया जिसमें वहाँ के शासक श्री थेवर को वीरगति प्राप्त हुई। इस युद्ध में महिलाओं और बच्चों पर भी अत्याचार किए गए। अनेक निर्दोष लोग मौत के घाट उतार दिए गए जो उस वक्त की क्रूरतम घटना थी। इस हत्याकांड के समय रानी अन्यत्र गई हुई थी अतः उन्होंने अपनी पुत्री सहित विरूपची में शरण ली। इस दौरान उन्होंने एक शक्तिशाली सेना का संगठन किया।

इस अभियान में उन्होंने गोपाल नायक तथा मैसूर के सुल्तान हैदर अली से भी सहायता मिली। हैदर अली से उन्होंने धारा प्रवाह उर्दू में बात की जिससे सुल्तान बहुत प्रभावित हुआ और रानी के राज्य को पुनः प्राप्त करने में सहयोग का देने का वचन दिया। इसके पश्चात उनको सभी शाही सहूलियतों के साथ डिंडुगल के किले में रहने की भी अनुमति दी गई। सैन्य संगठन व अन्य कार्यों के लिए सुल्तान ने उन्हें चार सौ पाउंड वजन स्वर्ण की मासिक मदद भी जारी की। वे शत्रुओं से बचने के लिए यथासमय अपना आवास भी बदलती रही। सुल्तान ने अंग्रेजों के विरुद्ध उन्हें सक्षम बनाने के लिए हथियारों की मदद भी भेजी।



गोपनीय तरीके से युद्ध की तैयारी करती हुई रानी 1780 में अंग्रेजों के सम्मुख आई और वो भी संपूर्ण शक्ति के साथ। फलतः आमने-सामने की लड़ाई हुई और फिरंगियों से लोहा लेने वाली वह पहली हिंदुस्तानी रानी हुई। उन्होंने अंग्रेजों के गोला-बारूद के असले का पता करवाया और फिर उस पर आत्मघाती हमला करवाकर उसे नष्ट करवा दिया। इस मिशन में उनका साथ कुयली नामक उनकी सहयोगी ने आत्मबलिदान करके दिया। उसने अपने को घी में सना लिया और खुद के आग लगा कर ब्रिटिश शस्त्रागार में कूद पड़ी। असले के अभाव में अंग्रेजों की हार हुई। कुयली को रानी की दत्तक पुत्री कहा जाता है। शिवगंगा राज्य पर अधिकार करके रानी ने वेल्लाची को अपनी उत्तराधिकारी घोषित किया और दशकों तक शासन किया। हैदर की सच्ची मित्रता के लिए रानी ने उनका आभार व्यक्त किया और अपनी मैत्री उनके पुत्र टीपू तक जारी रखी। 1796 में हृदयघात से रानी का देवलोकगमन हुआ और उनकी पुत्री ने शासन संभाला।

आजादी के एक अन्य सिपाही थे श्री कुमारसामी जिन्हें तिरुपुर कुमारन के नाम से भी जाना जाता है। इनका जन्म 1904 में तमिलनाडु के चेन्निमलाई इरोड में हुआ। उनका परिवार हाथ करघा चलाकर बुनकरी का कार्य करता था।



आर्थिक स्थिति की वजह से वे कम शिक्षा ग्रहण कर सके और 19 वर्ष की आयु में उनका विवाह हुआ। वे भी बुनकरी के कार्य से ही जुड़े हुए थे। गांधीजी के मत से प्रभावित होकर वे आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। संपूर्ण परिवार को उनके इस कृत्य से खतरा जानकर उनके परिवार ने उनका प्रखर विरोध किया। परिवार के प्रयास विफल रहे और उन्होंने युवाओं को आजादी के आंदोलन से जोड़ने के लिए देशबंधु युवा संघ की स्थापना की। इसमें तमिलनाडु और निकटवर्ती क्षेत्रों के जुझारू युवा शामिल होते थे।

उन्होंने तमिलनाडू में ब्रिटिश विरोधी मार्च आयोजित किए। वे कुमारों को आजादी की लड़ाई से जोड़ रहे थे इसलिए उनका एक नाम कुमारन भी पड़ गया। एकबार उन्होंने राष्ट्रीय ध्वज यात्रा निकलनी चाही, जिसके लिए फिरंगियों ने यात्रा न निकालने की चेतावनी दी। बाद में उनकी तिरंगा यात्रा पर भयंकर लाठी चार्ज किया गया लेकिन वे राष्ट्रीयध्वज पकड़े हुए ही खड़े रहे। उन पर क्रूर लाठीचार्ज किया गया। बाद में झण्डा पकड़े उनका मृत शरीर सड़क किनारे पाया गया। तब वे केवल 27 वर्ष के युवा थे। वह झण्डा जो कुमारन पकड़े हुए थे वह आजादी के अभिलेखागार का अभिन्न हिस्सा है। आज वे सबके लिए प्रेरणा के स्रोत हैं।

इस प्रकार से महान आत्माएँ सदा हमारे बीच विराजमान नहीं रहती बल्कि वे सदा हमें एक-दूजे के निकट लाती हैं। ये थी कहानियाँ दक्षिण भारत से आजादी की लड़ाई के गुमनाम सिपाहियों की। जिनके सम्मान में सिर नतमस्तक हो जाता है।

तालिबान का इतिहास

संजय कुमार सिंह, वरिष्ठ अनुवादक



सितंबर 2021 को अमरीकी सेना के अफगानिस्तान से हटते ही तालिबान ने वहाँ पर फिर से वापसी की है। अफगानिस्तान में एक भय के माहौल व्याप्त है। रास्तों में खुले-आम बंदूक लिए तालिबानी लड़ाकों को देखा जा सकता है। टीवी चैनलों ने भी ये दृश्य दिखाएँ हैं कि कैसे अफगानी नागरिक अपनी जान बचाने के लिए देश छोड़कर भाग रहे हैं। अगर ऐसा भय अफगानिस्तान में पसरा है तो इससे भारत भी अधिक दिनों तक अछुता नहीं रह सकता। दुनियाभर में ऐसी कट्टरवादी सोच रखने वाले अनेक लोग हैं जो तालिबान की वापसी पर जश्न मना रहे हैं। दुख की बात यह है कि ऐसे कट्टरवादी तत्व भारत में भी मौजूद हैं। तालिबान के जरिए वह सारे विश्व में निजाम ए मुस्तफा का सपना साकार होने की उम्मीद लिए हैं। यह तत्व भारत की बहुसंख्यक आबादी की पूजा पद्धति से नफरत करते हैं और चाहते हैं कि संपूर्ण 140 करोड़ भारतीयों को इस्लाम के अधीन कर दिया जाए। ऐसी सोच बहुत खतरनाक है और भारत की बहुसंस्कृति पर एक कुठाराघात है। तालिबान एवं भारत-अफगानिस्तान के रिश्तों को समझने के लिए आइए एक सरसरी नजर इसके इतिहास पर डालें और परिचित होते चलें इसके आकाओं से जिन्होंने अफगानिस्तान में आज की स्थितियों के निर्माण की पृष्ठभूमि तैयार की।

करीब 1000 वर्ष पहले अफगानिस्तान तक भारत का अंग था। अगर हम दो हजार साल पहले जाएँ तो अफगानिस्तान तक अशोक का साम्राज्य फैला हुआ था। आज भी अफगानिस्तान के कुछ हिस्सों से अशोक के शिलालेख पाए जाते हैं। गौतम बुद्ध की विशालकाय बामियान की मूर्तियों का अफगानिस्तान में मिलना यह दर्शाता है कि भारतवर्ष का विस्तार अफगानिस्तान तक था। करीब 1000 वर्ष पहले अफगानिस्तान के इतिहास ने करवट बदली जब वहाँ के हिंदूशाही वंश के शासक पर सुबुक्तगीन ने आक्रमण किया।



सुबुक्तगीन की मृत्यु के बाद उसके पुत्र महमुद गजनवी ने इस तरह के अनेक हमले किए। इन आक्रमणकारियों को अफगानिस्तान को पूरी तरह से अधीन करने एवं वहाँ से हिंदू संस्कृति को खत्म करने में पूरे सौ साल लगे। हिंदूशाही वंश के महान नायकों आनंदपाल, जयपाल, त्रिलोचनपाल, भीमपाल ने करीब 100 वर्षों तक आक्रमणकारियों के काफिलों को रोके रखा। भारतवर्ष इन नायकों का सदा ऋणी रहेगा। आज यदि अफगानिस्तान भारत का हिस्सा होता तो हालात इतने खराब ना होते क्योंकि भारतवर्ष हर संस्कृति एवं सभ्यता को पनपने का मौका देता

है। वर्तमान अफगानिस्तान की कहानी आज से ठीक 103 साल पहले शुरू होती है। जब ब्रिटेन एवं अफगानिस्तान के बीच तीन आंग्ल अफगान युद्ध का कोई परिणाम नहीं निकला तो अंग्रेजी हुकुमत यह समझ गई कि अफगानिस्तान से उसे कुछ मिलने वाला नहीं है इसलिए ब्रिटेन ने 1919 में अफगानिस्तान को स्वतंत्रता दे दी। 1919 में अफगानिस्तान की गद्दी पर शाह वंश का शासन कायम हुआ। यह राजतंत्र था और यहीं तैयार हुई तालिबान के पनपने की भूमि।

जहीर शाह: 1933 में अफगानिस्तान में जहीर शाह ने सत्ता संभाली। उनके 40 वर्ष के शासनकाल में अपेक्षाकृत शांति बनी रही। यह वह दौर था जब फिल्मों की शूटिंग भी अफगानिस्तान में होती थी। फिरोज खान की मशहूर फिल्म धर्मात्मा की शूटिंग भी इसी वक्त हुई थी। 1973 में अपना इलाज करवाने जहीर शाह इटली गए। उनके लौटने के पहले ही उनके सेना प्रमुख दाउद खान ने तख्ता पलट कर दिया और सत्ता हथिया ली।



दाउद खान: दाउद खान जहीर शाह का सिपाहसलार माना जाता था। जहीर को दाउद पर पूरा भरोसा था। लेकिन सत्ता के नशे में चूर दाउद खान ने जहीर शाह को हटाकर खुद को अफगानिस्तान का सर्वेसर्वा घोषित कर दिया। अब प्रधानमंत्री भी वही था, राष्ट्रपति भी वह और सेनाप्रमुख भी वह। अफगानिस्तान की जनता का विरोध होते देख दाउद ने वादा किया की वह जल्द ही एक नए संविधान की रुपरेखा रखेगा लेकिन 3 साल बाद उसने बड़ी ही चतुराई से सारे पदों का समाप्त कर खुद की सत्ता स्थापित कर ली। फलस्वरूप अफगानिस्तान की जनता भड़क उठी। अततः अफगानिस्तान में 1978 में साउर विद्रोह के अंतर्गत दाउद खान का तख्तापलट किया गया। दाउद के घर में घुसकर दाउद सहित उसके पूरे परिवार की हत्या कर दी गई और इस प्रकार दाउद सत्ता का अंत हो गया।



साउर विद्रोह: 1978 का वर्ष। दाउद खान के लोकतंत्र को बहाल करने के सारे वायदे झूठ साबित हुए थे। अफगानिस्तान की जनता में एक क्रोध पनप रहा था। तत्काल परिस्थितियों में सिर्फ दो विचारधाराएँ ही संपूर्ण विश्व में पनप रही थीं। एक तो पूंजीवाद और दूसरा साम्यवाद। 70 के दशक में साम्यवाद का प्रभाव एक तरह से संपूर्ण विश्व पर था। इसमें सोवियत संघ के 15 बड़े देशों से लेकर क्यूबा तथा दक्षिण अमेरिका के देश तथा स्वयं चीन शामिल थे। वहीं दूसरी तरफ पूंजीवाद को अमेरिका एवं यूरोपीय देशों से मजबूती मिल रही थी। एक तरह से इन दो विचारधाराओं के आपसी संघर्ष ने पूरे विश्व को एक अघोषित युद्ध में धकेल दिया था जिसे शीतयुद्ध नाम दिया गया। अफगानिस्तान भी इससे अछूता नहीं रहा और यही वह दौर था जिसमें अफगानिस्तान में आतंकवाद की नींव पड़ी।

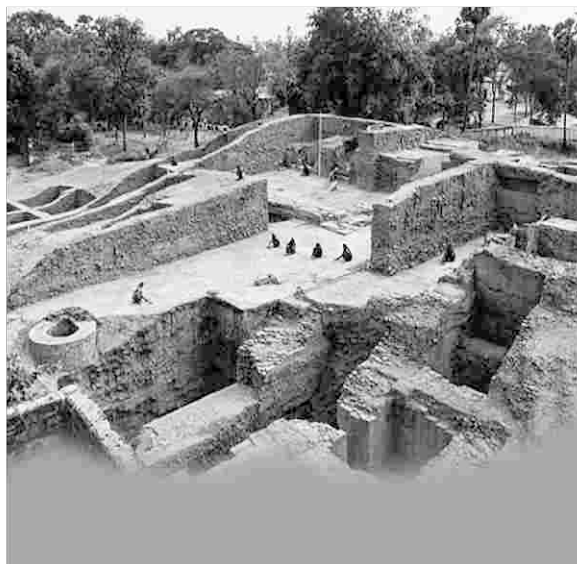
बिहार एक परिचय

शशिकांत कुमार, लेखाकार



बिहार भारत का प्रसिद्ध राज्य है जो उत्तर पूर्वी भाग में स्थित है। इसकी राजधानी पटना है। यह जनसंख्या की दृष्टि से भारत का तीसरा सबसे बड़ा राज्य है जबकि क्षेत्रफल की दृष्टि से 12 वाँ राज्य है। इसकी स्थापना 22 मार्च 1912 को हुई। यह भारत के प्राचीनतम राज्यों में से एक है। बीसवीं शताब्दी के आरंभ में बिहार एवं उड़ीसा बंगाल प्रांत के अंग थे। 1912 में बिहार एवं उड़ीसा को बंगाल से अलग करके एक नया प्रांत गठित हुआ। 1936 में उड़ीसा को बिहार से पृथक कर बिहार को अलग राज्य बनाया गया। सामान्यतः 1912 को बिहार राज्य के गठन वर्ष माना जाता है मगर उस समय बिहार एवं उड़ीसा संयुक्त रूप से एक राज्य बने हुए थे जो 1936 में पृथक हुए थे। 15 नवंबर 2000 को बिहार का पुनः विभाजन हुआ और छोटा नागपुर के पठारी भूखंड और इससे संबद्ध जनजाति बहुल आबादी वाले क्षेत्र को झारखंड नामक नए राज्य के रूप में घोषित किया गया।

बिहार का उल्लेख पूर्व ऐतिहासिक काल से ही आरंभ हो जाता है। लगभग 1,00,000 वर्ष पूर्व में विकसित होने वाले आरंभिक पूर्व प्रस्तर युगीन जारों के अवशेष मुंगेर और नालंदा जिले से प्राप्त हुए हैं। इनमें खुदरे पत्थर के बने कुल्हाड़ियों के फलक, चाकू और खुर्पी शामिल हैं। मध्यवर्ती और पूर्ववर्ती पूर्व पत्थर युगीन 40,000 से 10,000 ई० पू० के अवशेष भी यहां प्राप्त हुए हैं। नवपाषाण युग के अवशेष सारण और वैशाली जिले में मिले हैं। बिहार में ऐतिहासिक युग का आरंभ उत्तरवैदिक काल से जुड़ा है। आर्यों के पूर्वी भारत में विस्तार और गंगाघाटी के क्षेत्रों में द्वितीय नगरीकरण की प्रक्रिया में बिहार का विशेष महत्व रहा है। छठी शताब्दी ई० पू० में बौद्ध धर्म और जैन धर्म के उद्गम स्रोत के रूप में बिहार ने संसार को शांति एवं अहिंसा का संदेश दिया। बिहार में ही नंद शासकों द्वारा प्रस्तुत नींव पर मौर्य ने एक सुदृढ़ शासन प्रणाली निर्मित की जो एक अखिल भारतीय सत्ता रही और अफगानिस्तान तक उसका एक क्षेत्र राज रहा। सम्राट अशोक ने पहली बार एक कल्याणकारी राज्य का आदर्श यहीं से प्रस्तुत किया। गुप्तकाल में यह क्षेत्र विद्या, साहित्य और विज्ञान की अद्भुत प्रगति का साक्षी रहा है। पाल शासकों ने इसे बौद्ध विद्या का प्रसिद्ध केंद्र बनाया जिसे अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की। चित्रकला एवं मूर्तिकला की अनूठी प्रगति भी इस युग की विशेषता है।



बिहार में ही सिखों के दसवें और अंतिम गुरु श्री गोविंद सिंह जी का जन्म हुआ था। आधुनिक काल में बंगाल एवं बिहार ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध आन्दोलन के उदय का केंद्र रहे। ब्रिटिश सत्ता को पहली सशक्त चुनौती देने वाला जन आंदोलन, बहाव आंदोलन बिहार में ही संगठित हुआ। 1957 में बाबू कुंवर सिंह और पीर अली जैसे देशभक्तों ने ब्रिटिश सत्ता को यहीं से

ललकारा। गांधीजी ने चंपारण में पहली बार सत्याग्रह का सफल प्रयोग यहीं से किया। देश का जेपी आन्दोलन यहीं से शुरू हुआ जिसके कद का दूसरा आन्दोलन आज तक नहीं हुआ।

बिहार की जनसंख्या का अधिकांश भाग ग्रामीण है और केवल 11.5% प्रतिशत लोग नगरों में रहते हैं। इनके अलावा बिहार के 58% लोग 25 वर्ष से कम आयु के लोग हैं। बिहार की राजभाषा हिंदी और द्वितीय राजभाषा उर्दू है। मैथिली भारतीय संविधान के अष्टम अनुसूची में सम्मिलित एकमात्र बिहारी भाषा है। भोजपुरी, मगही, मैथिली, अंगिका और वज्जिका बिहार में बोली जाने वाले अन्य प्रमुख बोलियाँ हैं। प्रमुख पर्वों में यहाँ होली, छठ पूजा, कृष्ण जन्माष्टमी, रामनवमी, बुद्ध जयंती, तीज, दीपावली, दशहरा, महाशिवरात्रि, नागपंचमी, ईद तथा क्रिसमस आदि माने जाते हैं। बिहार नें हिंदी को सबसे पहले राज्य की अधिकारिक भाषा माना है।

बिहार अपने खानपान की विविधता के लिए भी प्रसिद्ध है। शाकाहारी एवं माँसाहारी दोनों व्यंजन यहाँ पसंद किए जाते हैं। मिठाइयों की विभिन्न किस्मों के अतिरिक्त, अनरसा, गया की तिलकुट, मोतीचूर के लड्डू, खाजा, रफीगंज का छेना प्रसिद्ध हैं। चूड़ा दही और लिट्टी-चोखा जैसे स्थानीय व्यंजन तो यहां के लोगों की कमजोरी है। लहसुन की चटनी भी बहुत पसंद करते हैं। लालू प्रसादजी के रेलमंत्री बनने के बाद तो लिट्टी-चोखा भारतीय रेल के महत्वपूर्ण स्टेशनों पर भी मिलने लगा है। सुबह राष्ट्र नाश्ते में चूड़ा दही या पूरी जिलेबी खूब खाया जाते हैं। चावल दाल सब्जी और रोटी बिहार का सामान्य भोजन है।

एक समय बिहार प्रमुख शिक्षा केंद्रों में गिना जाता था। नालंदा विश्वविद्यालय, विक्रम शिक्षाविद्यालय तथा आनंदपुरी विश्वविद्यालय प्राचीन बिहार के गौरवशाली अध्ययन केंद्र थे। 1917 में खुलने वाले पटना विश्वविद्यालय भी काफी हद तक अपनी प्रतिष्ठा कायम रखने में सफल रहा। पटना में एक भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान और राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गाजीपुर में केंद्रीय प्लास्टिक इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टिट्यूट, केंद्रीय औषधीय शिक्षा एवं शोध संस्थान खोला गया है, जो अच्छा संकेत है।

बिहार सरकार भारतीय गणराज्य के संघीय ढांचे में द्विसदनीय व्यवस्था के अंतर्गत आता है। राज्य का संवैधानिक मुखिया राजपाल है, लेकिन वास्तविक शक्ति मुख्यमंत्री और मंत्री परिषद के हाथ में होती है। विधानसभा में चुनकर आने वाले विधायकों द्वारा मंत्रिमंडल का चुनाव 5 वर्षों के लिए किया जाता है जबकि राज्यपाल की नियुक्ति भारत के राष्ट्रपति के द्वारा की जाती है। प्रत्यक्ष चुनाव में बहुमत प्राप्त करने वाले राजनीतिक दल अथवा गठबंधन के आधार पर सरकार बनती है। उच्च सदन या विधान परिषद के सदस्यों का चुनाव अप्रत्यक्ष ढंग से 6 वर्षों के लिए होता है।

त्रिमोहिनी संगम बिहार राज्य के कटिहार जिला के कटरिया गाँव के निकट स्थित नदियों का संगम है। यहाँ प्रमुख रूप से कोशी का गंगा में मिलन होता है, जिसके साथ ही कलबलिया नदी की एक छोटी धारा की उत्पत्ति भी होती है। त्रिमोहिनी संगम भारत की सबसे बड़ी उत्तरवाहिनी गंगा का संगम है। 12 फरवरी वर्ष 1948 में महात्मा गांधी के अस्थि कलश जिन 12 तटों पर विसर्जित किए गए थे, त्रिमोहिनी संगम भी उनमें से एक है। यहाँ पटना में प्राचीन एवं मध्यकालीन इमारतें: कुमहार परिसर, अगमकुआं, महेन्द्रघाट, शेरशाह के द्वारा बनवाए गए किले का अवशेष आदि स्थित हैं। ब्रिटिश कालीन भवन: जालान म्यूजियम, गोलघर, पटना संग्रहालय, विधान सभा भवन, हाई कोर्ट भवन , सदाकत आश्रम आदि दर्शनीय स्थल भी पटना में हैं। हरमंदिर, बड़ी पटन

देवी, छोटी पटन देवी, महावीर मंदिर, शीतला माता मंदिर, इस्कॉन मंदिर, नवलख्खा मंदिर, सूर्य मंदिर, पादरी की हवेली, शेरशाह की मस्जिद, बेगू हज्जाम की मस्जिद, पत्थर की मस्जिद, जामा मस्जिद, फुलवारी शरीफ में बड़ी खानकाह, मनेर शरीफ आदि धार्मिक स्थल बिहार में स्थित हैं।

गया हिन्दू और बौद्धों का सबसे सबसे बड़ा तीर्थ स्थल है। पितृपक्ष के अवसर पर यहाँ दुनिया भर से हिंदू आकर फल्गू नदी किनारे पितरों को तर्पण करते हैं। विष्णुपद मंदिर, बोधगया में भगवान बुद्ध से जुड़ा पीपल का वृक्ष तथा महाबोधी मंदिर, तिब्बती मंदिर, थाई मंदिर, जापानी मंदिर, बर्मा का मंदिर, बौधनी पहाड़ी (इमामगंज), वाणावर की गुफाएं, प्रेतशिला की पहाड़ियाँ, रामशिला की पहाड़ियाँ और सीताकुंड यहाँ के अन्य दर्शनीय स्थल हैं।

राजगृह मगध साम्राज्य की पहली राजधानी तथा हिन्दू जैन एवं बौद्ध धर्म का एक प्रमुख दार्शनिक स्थल है। भगवान बुद्ध तथा वर्धमान महावीर से जुड़ा कई स्थान अतिपवित्र हैं। वेणुवन, सप्तपर्णी गुफा, गृध्रकूट पर्वत, जरासंध का अखाड़ा, गर्म पानी का कुंड, मखदूम कुंड आदि राजगीर के महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थल हैं।



नालंदा विश्वविद्यालय के भग्नावशेष, पावापुरी में भगवान महावीर का परिनिर्वाण स्थल एवं जलमंदिर, बिहारसरीफ में मध्यकालीन किले का अवशेष एवं नवादा के पास ककोलत जलप्रपात अदि नालंदा के दर्शनीय स्थल हैं। छठी सदी इसापूर्व में वज्जिसंघ द्वारा स्थापित विश्व का प्रथम गणराज्य के अवशेष, अशोक स्तम्भ, बसोकुंड में भगवान् महावीर की जन्म स्थली, अभिषेक पुष्करणी, विश्वशांति स्तूप, राजा विशाल का गढ़, चौमुखी महादेव मंदिर, भगवान महावीर के जन्मदिन पर वैशाख महीने में आयोजित होने वाला वैशाली महोत्सव आदि वैशाली में दर्शनीय हैं।

कोनहारा घाट, नेपाली मंदिर, रामचौरा मंदिर, १५वीं सदी में बनी मस्जिद, महात्मा गांधी सेतु, गुप्त एवं पालकालीन धरोहरों वाला चेचर गाँव, प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा से लगने वाला सोनपुर मेला, सारण जिले का नवपाषाण कालीन चिरांद गाँव हाजीपुर में प्रसिद्ध जगह हैं। तो चंपारण में अशोक द्वारा लौरिया में स्थापित स्तंभ, लौरिया का नंदन गढ़, नरकटियागंज का चानकीगढ़, वाल्मीकिनगर जंगल, बापू द्वारा स्थापित भीतीहरवा आश्रम, तारकेश्वर नाथ तिवारी का बनवाया रामगढ़वा हाई स्कूल, स्वतंत्रता आन्दोलन के समय महात्मा गाँधी एवं अन्य सेनानियों की कर्मभूमि स्थित हैं। सीतामधि के पुनौरा में देवी सीता की जन्मस्थली, जानकी मंदिर एवं जानकी कुंड, हलेश्वर स्थान, पंथपाकड़ हैं और यहाँ से सटे नेपाल के जनकपुर जाकर भगवन राम का स्वयंवर स्थल भी देखा जा सकता है।

कार्यालय में हिंदी कार्यों को बढ़ावा देने के उपाय

वे. राजू, सहायक लेखा अधिकारी



आसान है हिंदी पढ़ना, लिखना, सीखना। कार्यालय में हिंदी कार्यों को बढ़ावा देने के लिए, सबसे पहले कार्यालय के कर्मचारियों को प्रशिक्षण दें ताकि सभी कर्मचारी को बोलने लिखने में आसानी हो। हिंदी को परिचित करने के लिए कार्यालय के टिप्पण और आदेश में अंग्रेजी के साथ हिंदी का भी प्रयोग किया जाए, ताकि कर्मचारी हिंदी से परिचित हो और आसानी से समझ सके। उपस्थिति पंजी में अपना नाम, अनुभाग का नाम अंग्रेजी एवं हिंदी दोनों में लिखने का बढ़ावा देना चाहिए। कर्मचारी पत्र लिखते समय हिंदी शब्द का उपयोग करें। हर महीना जो ज्यादा हिंदी शब्दों का प्रयोग करते हैं उन्हें पुरस्कृत किया जा सकता है। साल भर में कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए अंक दे सकते हैं ताकि पखवाड़े के दौरान ऐसे कर्मचारियों को पुरस्कृत किया सकते सके। हिंदी में टंकण करने के लिए सॉफ्टवेयर उपलब्ध कराया जाए जिससे हिंदी को बढ़ावा हो सके।

सभी कर्मचारियों को कार्यालय द्वारा संचालित हिंदी पाठ्यक्रमों में नियमित रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। महीने में एक बार एक दिन का हिंदी लेखन व बोलचाल दिवस मनाया जाए ताकि कर्मचारियों को भाषा की समझ हो सके। सभी नोटिंग, ड्राफ्ट द्विभाषी में करवाए जाएं। जिन व्यक्तियों को हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान नहीं है, उन्हें आधिकारिक रूप से हिंदी में काम



करने के लिए हिंदी प्रशिक्षण देना चाहिए। कर्मचारियों के बीच नियमित रूप से बातचाल कार्यक्रम आयोजित करने से हिंदी बोलने का आत्मविश्वास मिलता है। कार्यालय के काम से संबंधित विषय को द्विभाषी में नियमित रूप से प्रदर्शित करने से कर्मचारी आसानी से हिंदी पढ़ और समझ सकते हैं। जिन लोगों को हिंदी का कम ज्ञान है, उन्हें संचार में हिंदी शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। गैर-हिंदी भाषी कर्मचारियों को कार्यालय में विभिन्न योजनाओं की शुरुआत के साथ हिंदी में बोलने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जो उन्हें हिंदी कार्यक्रम में भाग लेने के लिए प्रेरित कर सकें। सरल हिंदी का अधिक से अधिक उपयोग कार्यालय के कार्यों के लिए बेहतर है। कार्यालय हिंदी के लिए अभ्यास आधारित कार्यशालाएं आयोजित करे। हिंदी में मूल कार्य करने के लिए नकद पुरस्कार दिए जानी चाहिए। सभी कर्मचारियों को कम्प्यूटर में दक्षतापूर्वक प्रयोग करने के लिए हिन्दी साफ्टवेयर का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। शत-प्रतिशत हिंदी में करने वालों की प्रशंसा होनी चाहिए।

आजादी के 75 साल

अजय नाथ त्रिपाठी, लेखाकार



15 अगस्त 2022 को हमारे देश की आजादी के 75 साल पूरे हो गए। इन 75 सालों में हमारे देश में बहुत सारे उतार-चढ़ाव देखे, जिसमें से कुछ हमारे देश की प्रगति के लिए अच्छा साबित हुए तो कुछ प्रगति में बाधा बने। इन सब चीजों के बावजूद हमारा देश अपनी आजादी के 75 साल पूरे करते समय भी अपने आगे बढ़ने के जज्बे को बरकरार रखा है। इन 75 सालों में हमारे देश में क्या बदलाव हुए, उनको इन आंकड़ों के माध्यम से समझा जा सकता है।



» देश की आबादी:	1951-	36.10 करोड़	2022-	137.09 करोड़
» सोने की कीमत:	1947-	89 रु (10ग्राम)	2022-	52,000 (10ग्राम)
» पेट्रोल की कीमत:	1947-	47 पैसे/लीटर	2022-	96.72 रुपए/लीटर
» लगजरी गाड़ियां :	1951-	3.06 लाख	2022-	29.12 करोड़
» सड़कों की लंबाई:	1951-	4 लाख किमी	2019-	63.31 लाख किमी
» रेलवे किराया:	1951-	1.5 पैसा/किमी	2019-	66 पैसा/किमी
» डाकघर:	1947-	23,344	2022-	156,434
» राज्य:	1956-	14 राज्य	2022-	28 राज्य
» केंद्रशासित प्रदेश:	1956-	6 प्रदेश	2022-	8 प्रदेश
» आईआईटी:	1951-	1	2022-	23
» मुद्रा भंडार:	1951-	1.82 अरब डालर	2022 -	573 अरब डालर
» मातृ मृत्यु दर:	1947-	2000	2022-	103
» स्कूल:	1948-	1,52,814	2021-	15,09,136
» नवजात मृत्यु दर:	1951-	146	2019-	30
» सरकारी अस्पताल:	1951-	2014	2022-	41,245
» डॉक्टरों की संख्या:	1951-	59,000	2022-	13,01,319

शिक्षक

आर शांति, व. लेखा अधिकारी



शिक्षक जो है वह बालक में व्यक्तित्व का विकास करते हैं और उसमें अच्छे मूल्य और आदर्श विकसित करते हैं। इससे आगे चलकर देश के उत्तम नागरिक बनते हैं। उत्तम नागरिक देश की उन्नति में अपना योगदान देते हैं। एक शिक्षक की जिम्मेदारी अधिक होती है। उन्हें बच्चों का न केवल बौद्धिक और मनोवैज्ञानिक विकास करना है अपितु नैतिक, चारित्रिक और सामाजिक विकास भी करना होता है। यह भी उनका कर्तव्य है। शिक्षक वह है जो विद्यार्थी में आत्मविश्वास का संचार करता है। इसकी वजह से मानव अपने जीवन में कुछ करने का हौसला प्राप्त करते हैं। शिक्षक मानव को ईर्ष्या, हिंसा, अधर्म, चोरी जैसी बुरी आदतों से दूर रखते हैं। वे अपने सभी विद्यार्थियों में कोई भी भेद किए बिना निस्वार्थ ज्ञान देते हैं।

वे अंधकार दूर करके रोशनी देते हैं। डॉक्टर ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, स्वामी विवेकानंद, डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन आदि कुछ आदरणीय शिक्षक हैं। एक शिक्षक ईश्वर की तरह होता है क्योंकि ईश्वर सारे जहान का निर्माण करता है जबकि शिक्षक को एक राष्ट्र का निर्माण करना होता है। एक अच्छे शिक्षक के कुछ गुण कौशल, सहयोग, क्षमता, अनुकूलन, सहानुभूति और धैर्य



हैं। प्रभावी शिक्षक की अन्य विशेषताओं में से एक है उसकी आकर्षक और नियमित कक्षा में उपस्थिति। वास्तविक दुनिया में सीखने की चीज मूल्य, सर्वोत्तम प्रथाओं का आदान-प्रदान और सीखने के प्रति ललक शामिल है। शिक्षक का मुख्य कर्तव्य पढ़ाई करवाना ही होता है। एक सफल शिक्षक वह है जो अपने छात्रों को उच्च सफलता की ओर प्रेरित करने का शक्ति रखता है। शिक्षक ज्ञान का महासागर है। बच्चों के भविष्य को प्रकाशित करने में माता-पिता के बजाए एक शिक्षक का योगदान अधिक रहता है। वह जीवन को बनाने में निस्वार्थ भाव से अपनी सेवा देता है। इसलिए ही यह कहा जाता है 'माता, पिता च गुरु देवमा।' यद्यपि सच्चा गुरु अपना काम पूरी लगन और निष्ठा से करता है लेकिन फिर भी कुछ शिष्य वह सब नहीं प्राप्त करते जो समाज के लिए उपयोगी हो। इसमें गुरु का दोष नहीं है क्योंकि संसार की यही विशेषता है। इस सम्बन्ध में महाकवि तुलसीदास कहते हैं-

जड़ चेतन गुन दोषमय बिस्व कीन्ह करतार।

संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि बारि बिकार॥

संसार सागर की विशेषता बताते हुए तुलसीदासजी कहते हैं कि विधाता ने इस जड़-चेतन विश्व को गुण-दोषमय रचा है जिसके प्रभाव से दुष्ट और सज्जन सभी जन्म पाते हैं और उसी अपने स्वभाव के वशीभूत वे कुसंग व सत्संग की तरफ प्रेरित हो जाते हैं। यही कारण है कि संतरूपी हंस दोषरूपी जल को छोड़कर गुणरूपी दूध को ही ग्रहण करते हैं।

पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के उपाय

दीपा सिंह, लेखाकार



पर्यावरण प्रदूषण आज के दौर की सबसे बड़ी समस्या है। पर्यावरण के जैविक एवं अजैविक आंखों में होने वाले आमामान परिवर्तन पर्यावरण प्रदूषण कहलाता है। यह पर्यावरण प्रदूषण मानव ही नहीं अपितु संपूर्ण जीवधारी के लिए परेशानी है। इसके नकारात्मक प्रभाव से आज जीवों की कुछ प्रजातियाँ विलुप्त हो चुकी हैं एवं कुछ समाप्त होने के कगार पर हैं। मनुष्य ने अपने निजी स्वार्थ के लिए पेड़ों की अंधाधुंध कटाई की है जो कि पर्यावरण असंतुलन का मुख्य कारण है। प्रदूषण मुख्यतः मानवीय गतिविधियों के द्वारा उत्पन्न होता है एवं हमारे पारिस्थितिक तंत्र पर बुरा प्रभाव डालता है। मानव ने अपने तुच्छ लाभ हेतु पर्यावरण की बार-बार अनदेखी कर इसे प्रदूषित बना दिया है। पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले कुछ महत्वपूर्ण तत्व हैं जैसे कार्बन मोनो ऑक्साइड, सल्फर डाई ऑक्साइड, अमोनिया आदि गैस, धुआँ, धूल, डिटर्जेंट्स आदि रसायनिक पदार्थ, ध्वनि ऊष्मा, रेडियो एक्टिव पदार्थ आदि पर्यावरण में अवांछित रूप में मिलकर इसे असंतुलित बनाते हैं जिससे पर्यावरण प्रदूषित होता है। यहाँ पर्यावरण प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण बिंदु प्रस्तुत हैं-

» वृक्षों की अंधाधुंध कटाई पर रोक लगाकर वृक्षारोपण को प्रोत्साहित करना चाहिए, साथ ही अधिक पेड़ों से होने वाले लाभ को लोगों तक पहुंचाना एवं प्रचारित करना चाहिए।

» खाद्य उत्पादन में रसायनिक उर्वरकों का कम से कम प्रयोग कर जैविक उर्वरकों के प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए। जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने का प्रयास करना चाहिए।



» कारखानों की चिमनियों में फिल्टर लगाना चाहिए एवं चिमनियों को अधिक ऊँचाई पर रखना चाहिए। कारखानों द्वारा निकालने वाली प्रदूषित जल को कृत्रिम तालाबों में उपचारित करने के उपरांत ही नदियों में छोड़ना चाहिए।

» कम शोर करने वाले मशीन के उपयोग को बढ़ावा देना चाहिए एवं उद्योगों को शहर या आबादी वाले स्थान से दूर स्थापित करना चाहिए। परमाणु परीक्षणों पर प्रतिबंध लगाना चाहिए। सिंगल यूज प्लास्टिक या अन्य किसी प्लास्टिक के उपयोग को कम कर के पर्यावरण अनुकूल वस्तुओं का प्रयोग करना चाहिए।

» घरेलू एवं औद्योगिक अपशिष्टों का निस्तारण करना आवश्यक है। नवीनीकरण ऊर्जा के स्रोत के प्रयोग पर जोर देना चाहिए। नॉन बायो डिस्पोजेबल वस्तुओं के निस्तारण पर भी ध्यान देना चाहिए क्योंकि यह हमारे पर्यावरण में वर्षों तक रह जाती है जिससे पर्यावरण काफी प्रदूषित हुआ है।

एक नया एहसास



संतोष कुमार, लेखाकार

प्रदीप के लाख मना करने के बावजूद भी उसके दोस्तों ने इस बार की गर्मी की छुट्टी प्रदीप के पुश्तैनी गांव में बिताने का निर्णय लिया। प्रदीप को छोड़कर बाकी सभी लोगों की आंखों में एक अलग सी चमक नजर आ रही थी। भला यह चमक क्यों न आए क्योंकि इन शहरी बाबूओं का किसी गांव में पहली बार जाना जो हो रहा था। प्रदीप का घर उसके छात्रावास से करीब साढ़े दो सौ किलोमीटर की दूरी पर भारत-नेपाल सीमा के पास स्थित था। इस कारण प्रदीप के दोस्त गांव की सैर करने के साथ-साथ नेपाल भ्रमण के लिए भी काफी उत्सुक थे। सभी दोस्तों ने रात में ही अपना सामान बांध लिया और एक नई सुबह की इंतजार में अपनी-अपनी आंखें मूंद कर खुद को खेत-खलियानों के बीच महसूस करते-करते सो गए। अक्सर कॉलेज में ये सभी देर से जगते थे, परंतु इस बार काफी सुबह जागकर तैयार होने लगे। प्रदीप को अपने गांव पहुंचने के लिए पहले ट्रेन फिर बस और अंत में टांगा का सहारा लेना पड़ता था।

स्टेशन पहुंच कर पता चला कि नेताओं ने अपनी मांगें पूरी करवाने के लिए रेल लाइन पर धरना प्रदर्शन कर रखा है जिसके कारण उत्तर की ओर जाने वाली सभी ट्रेन विलंबित थी। समय बिताना मुश्किल हो रहा था देखते ही देखते तीन घंटे गुजर गये। इसी बीच स्टेशन मास्टर के द्वारा घोषणा की गई कि प्लेटफार्म नंबर छह पर उत्तर की ओर जाने वाली सवारी गाड़ी आ रही है। ट्रेन में काफी भीड़ थी परंतु दो तीन स्टेशन गुजरने के बाद सभी को अपनी अपनी जगह मिल गई। अभी भी यहां से दो घंटे का सफर ट्रेन से करना था।

ट्रेन अपने गंतव्य स्थान पर पहुंच चुकी थी। प्रदीप ने अपने दोस्तों के साथ गांव के नजदीकी शहर के लिए बस पकड़ी और शहर पहुंचकर गांव के लिए टांगा लिया। पहली बार टांगे की सवारी करके प्रदीप के सभी दोस्त फूले नहीं समा रहे थे। जैसे-जैसे गांव नजदीक आता गया वैसे-वैसे प्रकृति की



सुंदरता अपना जादू बिखरे जा रही थी। ऊपर लालिमा ओढ़े हुए आसमान, ताल-तिलैया के स्वच्छ पानी और हरी-भरी खेत खलियान के मनोरम दृश्य को सभी लोग अपने आंखों में संजोए जा रहे थे। सभी को खबर तक न चली कि कब प्रदीप का घर आ गया।

प्रदीप अपने सभी दोस्तों को दालान (फार्महाउस) पर ले गया जहां उसके दादाजी, बड़े बाबू जी, पिता जी और सभी भाई इंतजार कर रहे थे। प्रदीप ने अपने परिवार वालों का चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लिया तथा अपने दोस्तों का परिचय उन लोगों से करवाया। प्रदीप के सबसे छोटे भाई ने प्रदीप और उसके दोस्तों के चापाकल के शीतल जल से हाथ पैर धुलवाए। गांव पहुंचकर प्रदीप के सभी दोस्तों को एक अलग अनुभूति मिल रही थी। आसपास के घरों से खीर और सब्जियों की

सुगंध वातावरण में अपने मिठास और मनोरम महक फैलाया जा रही थी। जर्दालू और आमपाली आम की खुशबू भी अपनी जादू बिखेर रही थी। पास के मंदिर से ठाकुर जी का भजन कीर्तन का आवाज भी काफी कर्ण प्रिय थी। कुछ देर बाद घर से भोजन करने के लिए बुलावा आया तथा सभी लोग भोजन के लिए घर निकल पड़े। गांव में अभी तक बिजली नहीं पहुंची थी लेकिन चांद अपनी चांदनी रोशनी से पूरे गांव को नहला रही थी। घरों में जल रहे दीए और लालटेन की रोशनी जगमगा रही थी। गांव के अधिकतर मकान कच्चे थे लेकिन देखने में काफी सुंदर थे।

दरवाजे पर पहुंचते ही प्रदीप का कुत्ता भूरा उछल-उछल कर अपनी खुशी जाहिर कर रहा था। घर पहुंचकर प्रदीप ने अपने सभी दोस्तों का परिचय घर के अन्य सभी सदस्यों से करवाया। प्रदीप की माँ ने बताया कि आज गांव के सभी लोग वर्षा के देव इंद्रजीत को प्रसन्न करने के लिए त्योहार मना रहे हैं ताकि इस साल वर्षा अच्छी हो। यही कारण था कि पूरे गांव में खीर की खुशबू गमक रहा था। सभी लोगों ने खीर, दाल वाली पूरी और स्वादिष्ट आम का लुप्त उठाया। प्रदीप के सभी दोस्तों ने पहली बार इतने बड़े परिवार में एक साथ बैठकर भोजन का आनंद उठाया था। भोजन करने के उपरांत प्रदीप ने अपने दोस्तों को गांव के अपने पुराने दोस्तों से मिलवाया। सभी ने कुछ देर बातें की और सोने के लिए एक बार फिर दालान पहुंच गए। बरामदे पर रखी सभी कुर्सियां और खाट लोगों से भरे हुए थे। ऐसा लग रहा था कि कोई संवेदनशील मुद्दा चल रहा था। प्रदीप ने अपने सभी दोस्तों को बिस्तर पर चलने के लिए कहा लेकिन उन लोगों की दिलचस्पी इस बैठक की ओर बढ़ रही थी। वे सभी खड़े होकर बातें सुनने लगे।

मामला गांव का एक किसान बुझावन और सेठ धनीराम का था। बुझावन में सेठ धनीराम से अपनी बेटी की शादी के लिए पाँच वर्ष पहले कुछ कर्ज लिया था, जिसका मूलधन बुझावन ने कब का चुकता कर दिया था। लेकिन ब्याज की राशि बढ़ते जा रही थी। बुझावन ने बताया कि ब्याज की राशि नहीं देने के कारण सेठ ने उसकी जमीन पहले ही कब्जा कर रखा था। बुझावन और उसकी पत्नी फगुनिया बंधुआ मजदूर की तरह सेठ के खेतों में काम किया करती थी ताकि इस प्रकार भी ब्याज की रकम चुकता हो सके। परंतु सेठ का मुंशी मकखीलाल का हिसाब-किताब में इतना बड़ा झोल था कि बुझावन अपनी पूरी उम्र भी सेठ के खेतों में काम करे तो भी ब्याज की रकम चुकता नहीं हो सकता था। हद तो तब हो गई जब आज बुझावन के सात वर्षीय बेटा गोलू को सेठ ने जबरदस्ती स्कूल से उठाकर अपने खेतों में काम करने के लिए ले आया था। किसी गांव वाले ने मुंशी मकखीलाल को सेठ के कान भरते हुए सुना था। मकखीलाल बोल रहा था कि मालिक, बुझावना के बेटा स्कूल में, बाप काटे कुट्टी आ बेटा पहने जूती। गईल भैंसिया पानी में। सेठ को डर लग गया था कि अगर बुझावन और उसके जैसे अन्य लोगों के बच्चे पढ़ लिख जाएगा तो उसके खेतों में काम कौन करेगा ? इसलिए वह अपने सभी कर्जदारों के बच्चों को काम पर रखता था ताकि ये सभी स्कूल न जा सके। ऐसा नहीं था किसी ने धनीराम के खिलाफ पहली बार शिकायत की थी। हर बार सेठ का मुंशी मकखीलाल खाता में फेरबदल कर सेठ को बचा ही लेता था। इस बार भी सेठ को पूरा यकीन था कि पंचायत उसका बाल भी बांका नहीं कर सकता था। अगली सुबह पंचायत बुलाने का फैसला लेकर सभी लोग अपने अपने घर सोने चले गए।

प्रदीप और उसके दोस्तों ने इस बार सेठ धनीराम को सबक सिखाने का फैसला किया। सभी दोस्तों ने कॉलेज में कई बार बाल शिक्षा पर जोर देने के लिए अभिनय किया था। लेकिन इस बार बात अलग थी। एक तरफ सेठ धनीराम का ब्याज का रकम था जो अजगर सांप की पूंछ की तरह

दिन प्रतिदिन बढ़ती जाती था तो दूसरी तरफ मुंशी मक्खीलाल का हिसाब-किताब जिसका तोड़ अभी तक किसी के पास नहीं था। इन सबके बीच बुझावन के बेटा गोलू और उसके जैसे कई और बच्चों को सेठ धनीराम के चंगुल से आजाद करवाना भी चुनौती पूर्वक काम था। प्रदीप के बचपन के दोस्त भोला का सेठ के घर आना जाना लगा रहता था। इसलिए सभी दोस्तों ने फैसला किया कि भोला से सेठ और मुंशी के बारे में कुछ जानकारियाँ इकट्ठा की जाए। भोला ने इन दोनों के बारे में सभी को सारी बातें बताई। सभी लोग कुछ देर मंत्रणा करने के बाद सो गए।

अगली सुबह कोयल की मीठी आवाज ने सभी को जगाया। प्रदीप और उसके सभी दोस्त बांस तथा नीम के दातुन से दांत साफ कर पंचायत की तरफ पैदल निकल पड़े। गांव के सभी लोग अपनी दिनचर्या में लगे हुए थे। कुछ ग्रामीण अपने बैलों को लेकर खेतों में जा रहे थे तो कुछ मवेशियों के लिए चारा का व्यवस्था कर रहे थे। महिलाएं कुएं पर पानी भर रही थी और बच्चे पास में ही खेल रहे थे। सूरज की रोशनी पूरे गांव में अपना प्रकाश बिखेर रहा था और गांव बहुत सुंदर नजर आ रहा था। कुछ देर चलने के उपरांत वे सभी पंचायत भवन पहुंचे जहां गांव के मुखिया, सरपंच, बुझावन, सेठ और अन्य लोग पहले से ही पहुंचे हुए थे। पंचायत प्रारंभ हुई और पंचों ने बुझावन की समस्या और सेठ धनीराम की दलीलों को ध्यान पूर्वक सुना। हर बार की भांति इस बार भी मुंशी मक्खीलाल ने पंचों से अपने बहीखाता के साक्ष्य के अनुसार सेठ धनीराम को निर्दोष घोषित करने की अपील की। पंचों ने बहीखाता देखा और उनके चेहरे के हावभाव से ऐसा प्रतीत हो रहा था कि इस बार भी सेठ धनीराम बच जाएगा। लेकिन इसी बीच प्रदीप ने पंचों से गुजारिश की कि मुंशी का बहीखाता उसे और उसके दोस्तों को देखने दिया जाए। सेठ और मुंशी ने इसका विरोध किया है लेकिन पंचों ने बहीखाता प्रदीप को दे दिया।

अब लोगों में उत्सुकता बढ़ रही थी क्योंकि पहली बार इन पंचों के अलावा कोई और व्यक्ति मुंशी का बहीखाता जाँच रहा था। मुंशी और सेठ के चेहरे से पसीना टपक रहा था। प्रदीप और उसके दोस्तों ने बारीकी से मुंशी के हिसाब किताब को देखा। कुछ ही देर में तस्वीर साफ नजर आने लगी। कई जगह बुझावन द्वारा जमा किए गए राशि को बहीखाता में मूलधन से घटाया नहीं गया था। साथ ही खेत में की गई मजदूरी का भी बहीखाता में कहीं उल्लेख नहीं किया गया था। सेठ और मुंशी अपनी पोल खुलती देख



भागने लगे। पंचायत में आए सभी लोग इन दोनों के पीछे भागने लगे लेकिन तब तक ये दोनों अपने घरों में जा चुके थे। थानेदार को खबर पहुंचाई गई तथा सेठ और मुंशी को गिरफ्तार किया गया। पंचों और ग्रामीणों ने प्रदीप और उसके दोस्तों की सराहना की और धन्यवाद प्रकट किया। प्रदीप और उसके दोस्तों ने सभी ग्रामीणों से अपने बच्चों को प्रतिदिन स्कूल जाने की अपील की। बुझावन और सेठ धनीराम के प्रकरण से ग्रामीणों को शिक्षा का महत्व समझ आ गया था तथा सभी ने प्रतिज्ञा ली कि वे लोग अपने बच्चों को खेतों में मजदूरी करने के लिए नहीं बल्कि स्कूल में पढ़ने के लिए भेजेंगे।

जिम्मेदारी

अमित कुमार साह, वरिष्ठ लेखाकार



जिम्मेदारी एक शब्द नहीं है बल्कि जीवन का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। आज के परिवेश में हर एक व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी को भलीभांति समझता है और उसको पूरा करने के लिए प्रयत्नशील है। हर कोई अपनी जिम्मेदारी को अच्छे से निभाना चाहता है। एक गरीब माँ बाप भी अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देने के लिए बहुत ही मेहनत करते हैं। अपनी इच्छाओं को दबाते हुए अपने बच्चों की इच्छाओं को पूरी करते हैं। वह अपने इस जिम्मेदारी को बहुत ही कठिनाई के साथ निभाते हैं और अपने बच्चों को समाज में एक नई पहचान बनाने का रास्ता प्रदान करते हैं। उनकी यह पहचान समाज के लिए एक मिसाल बन जाता है। इसके कई उदाहरण आए दिन समाज में देखने को मिलते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जिम्मेदारी को एक दायरे तक सीमित नहीं रखा जा सकता है।

जिम्मेदारी का अगर गहन अर्थ लिया जाए तो हम इसे कर्तव्य का नाम भी दे सकते हैं। कर्तव्य के अंतर्गत आप समाज में किसी भी कार्य को निष्पादित कर रहे हैं, तो उसे जिम्मेदारी के साथ कीजिए चाहे वह कार्य सरकारी या गैर सरकारी कार्यों से संबंधित हो। चूंकि हमारे देश भारत को कई चुनौतियों के बाद, बहुत संघर्ष के परिणामस्वरूप आजादी मिली है अतः प्रत्येक नागरिक को अपनी जिम्मेदारी को अच्छी तरह निभाना चाहिए तभी हमारा राष्ट्र आगे बढ़ेगा। जिम्मेदारी का अभिप्राय यह है कि हमारे संविधान के मूल्यों को अपने जीवन में अपनाएं। संविधान में दिए गए मौलिक कर्तव्यों को पूरी जिम्मेदारी के साथ पालन करना प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है। आज समाज में कहीं असामाजिक तत्व भी पनप रहे हैं जो समाज और देश की छवि को धूमिल कर रहे हैं। इसके कारण लोग अपनी जिम्मेदारी के प्रति विमुख होते जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में लोगों को जागरूक होना चाहिए एवं अपनी जिम्मेदारी को समझना चाहिए जिससे कि वह ऐसे असामाजिक तत्वों को समाज में पनपने से रोक सकते हैं।

इस आधुनिक समय में जहाँ लोगों का जीवन एक मिशन की तरह बन गया है, वहीं इंसान अपने जमींदारी के प्रदेश प्रति उदासीन होते जा रहे हैं। वे सब अपनी जिम्मेदारी को सिर्फ अपने परिवार तक सीमित कर चुके हैं, जिससे उनका ध्यान समाज के उन महत्वपूर्ण पहलुओं पर नहीं पड़ता है, जिससे उनकी एवं पूरे समाज का कल्याण जुड़ा है। अतः हर इंसान को चाहिए कि वे अपनी जिम्मेदारी को परिवार के साथ-साथ समाज एवं देश के हित के प्रति निभाएँ। कभी-कभी यह भी देखा जाता है कि समाज में किसी वर्ग के प्रति अत्याचार एवं उनके अधिकारों का हनन हो रहा है। एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि किसी भी गलत अफवाह को फैलने से रोकना चाहिए।



‘माँ और ‘गीता’



तुम याद आती हो माँ!

एम. रामास्वमी, व. लेखा अधिकारी

जब मैं अनमना सा सोया
तो तुमने पालने को हिला दिया।
तेरी मधुर लोरी
मेरे सपनों की राह थी।
तेरे आँचल के साये
बादल बनकर लहराते थे।

तुमने मेरा हाथ थाम लिया
जैसे ही मेरे कदम लड़खड़ाए।
अनगिनत बलिदान जिन्हें
मैं कभी नाम नहीं दे सकता।
तेरी आंखों की आभा
मेरा रस्ता रोशन कर देती थी।

नींद आने को जब
आंखें मेरी तरसती थी।
तो तेरी लंबी कहानियाँ
नींद आने तक चलती रहती।
जब चोट मेरे लगती
तो आंखें तेरी भर आती थी।

कितना दर्द सहा बलिदान किया
और मेरा जीवन बनाया।
जब मैं बड़ा हुआ
तो भी तुमने ध्यान रखा।
सदा उत्सुक और चौकस रहती
तुम याद आती हो माँ!

गीता का सार

वृंदा सुंदर, सहायक लेखा अधिकारी

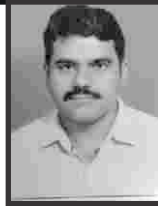
गलत सोचना ही जीवन की समस्या है।
सही ज्ञान सभी समस्याओं का समाधान है।
कर्म ही समृद्धि का एकमात्र सहारा है।
हर कार्य प्रार्थना से हो सकता है।
अहंकार को व्यक्तिगत रूप से त्यागो
और अनंत के आनंद में आनंदित हो जाओ।
प्रतिदिन उच्च विवेक से जुड़ो।

जो सीखा है उसे जियो।
अपने आप को कभी मत छोड़ो।
अपने आशीर्वादों को महत्व दें।
चारों ओर देवत्व देखें।
सत्य को जैसा है
वैसा देखने को समर्पित रहें।
अपने मन को उच्चतर में अवशोषित करें।

माया से अलग हो जाओ
और मन को परमात्मा से जोड़ो।
ऐसे जीवन शैली जिओ
जो आप की दृष्टि से मेल खाती हो।
देवत्व को प्राथमिकता दें।
अच्छा होना अपने आप में एक इनाम है।
सुखद पर अधिकार शक्ति की निशानी है।
चलो परमात्मा के सानिध्य में चलें।



‘राह’ और ‘गुमराह’



अपनी-अपनी राह

आर चित्रा, व.ले. अधिकारी
कमल की कलियाँ को सूरज की राह
तो बगुले को मछली की राह।
किसान को बारिश की राह
तो चकोर को बादल की राह।
अमीर को धन की राह
तो गरीब को भविष्य की राह।
गुरु को औजवान छात्र की राह
तो समाज सच्चे नेता की राह।
माँ को बच्चे के भले की राह
तो जानवर शिकार की राह।
युवक को भविष्य की राह
तो व्यापारी को लाभ की राह।
बच्चे को खेलों की राह
तो खिलाड़ी जीत की राह।
जनता को सुशासन की राह
तो वीर को मौके की राह।

राह देखना ही इंतजार है
जो सब जगह निरंतर है।
लेकिन इनमें सफल होना है
परिश्रम, निष्ठा और प्रभु-प्रसाद।

जैसी करनी वैसी भरनी
आपस में तकरार
तो जीवन बने बेकार।
खुद पर अहंकार
तो हो रिश्तों में अंधकार।
स्त्रियों पर अत्याचार
तो पाए तुरंत कारागार।
करेगा जो भ्रष्टाचार
तो होगा जीवन शर्मसार।
करेगा जो घूसखोरी
तो आ पड़ेगी आफत भारी।
बुजुर्गों का तिरस्कार
तो करो इसका प्रतिकार।

गुमराह

शिवजी पांडेय, लेखाकार

हम लोकतंत्र में जन्में
और आप गुलाम जन्में।

आप गुलाम जन्में तो भी आप
उलझे, झेले, लड़े, मरें, मारे।

कभी अंधेरे में गुमसुम गुजारे
कभी चकाचौंध में।

कभी पत्थर तोड़ते-तोड़ते हाथ तोड़े
कभी दौड़ते भागते पैर।

आप झूल गए सरकारी फंदे पर
निकल गई साँस।

आप गुलाम जन्में
पर लड़े, भिड़े पर हारे नहीं।

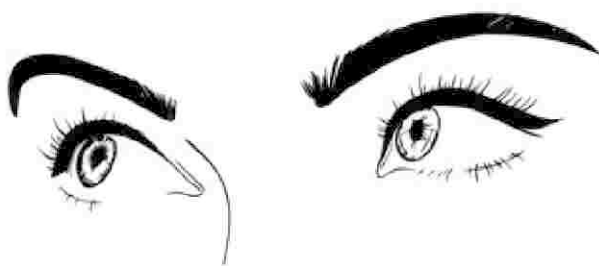
हम आजाद जन्में
वो भी आपकी कुटिया में।
आपके बनाए लोकतंत्र के गंदे पर
सोते रहे इत्मीनान से।
बहुत समय बीता
हम पले बढ़े और पैर पर खड़े हुए।

फिर गुलाम हुए खुद के
खुद ही पीड़ा सिंचित की।
आपकी कुटिया मरम्मत चाहे
हमें है सपना पक्के नीरस घरा का।
सब लुकाछुपी कर रहे
किसी को न जाने न पहचाने।

खेलते रहे आंख मिचोली खुद से
जिसे शक्ति समझे, आसक्ति निकली।
हम आजाद जन्में
पर न शक्ति है, न आत्मशक्ति।



‘व्यथा’



बेरोजगार की व्यथा

अनिल कुमार, लेखाकार

मैंने माँ के आंसुओं को छलकते देखा है।
मेरे बाबूजी को दर्द छुपाते देखा है।
मेरे भाई के सपनों को
अपनी आंखों में बुनते देखा है।
मेरी बहन की उम्मीद को
अपनों से जुड़ते देखा है।
तो कैसे न करूं नौकरी की आस!
मैंने खुद को
खुद से लड़ते देखा है।

दिनों को महीनों, महीनों को
साल बनते देखा है।
एक नौकरी की चाह में
मैंने खुद को बदलते देखा है।
महीनों तक मेहनत के बावजूद
खुद को मायूस होते देखा है।
हर रिश्तेदार के सवालों से
खुद को जूझते देखा है।

कभी तो लगोगी नौकरी
कभी तो पूरी होगी जरूरतें।
बस इसी उम्मीद में
खुद को पत्थर बनते देखा है।
कैसे ना करूं नौकरी की आस
खुद को खुद से लड़ते देखा है।

समाज की व्यथा

अजय नाथ त्रिपाठी, लेखाकार

कैसे-कैसे लोगों का बसेरा है ये।
सुबह में लेकिन काला सवेरा है ये।
यहाँ सभी को अपने पर ही नाज़ है।
किसी का कल तो किसी का आज है।

कोई यहाँ कोई भूख से मरता है।
तो कोई महलों में बसता है।
गुमान जैसे सर पर बैठा है।
अपनी-अपनी राग में हर कोई ऐंठा है।

देखो लालच कैसी बढ़ रहा है।
सब कुछ पाने को लार टपका रहा है।
छुपछुप कर लोग आहत हो रहे हैं।
अपने ही अपनों का विश्वास खो रहे हैं।
रिश्तों के मायने बदल गये हैं।
खुद से जो मिला सके,
वो आड़ने बदल गये हैं।
अपराध अब दिन-ब-दिन बढ़ रहे हैं।
भाई-भाई आपस में ही लड़ रहे हैं।

बुराईयों का अंत न जाने कब होगा!
या फिर लालच और बेबस करेगा!
अब सबको आगे आना होगा।
एक पौधा मोहब्बत का लगाना होगा।
समाज में फैले अंधकार को।
प्यार की रोशनी से मिटाना होगा।

रामकथा कलि बिटप कुठारी

पवन कुमार सिंह, लेखाकार



सम्पूर्ण मानस रामकथा की सुन्दर सूक्तियों का प्रबंधमय संगठन है जो भाषा में मात्राबद्ध की गई लोकप्रिय चौपाइयाँ हैं। भगवत गाथा चमत्कारिक प्रभाव छोड़ने वाला ग्रंथ है। मानस कुल सात काण्डों में विभाजित है और प्रत्येक काण्ड का अध्ययन फल विशेष के लिए विख्यात है जो बिना कामना के स्वतः ही प्राप्त होता है। रामकथा मानवता की परिक्रमा होने के साथ ही कर्म त्याग और भक्ति की त्रिवेणी भी है।

रामकथा की चौपाइयों का स्मरण तो मन को शांति और अज्ञात शुभफल एवं वैभव प्रदान करने के लिए विख्यात है क्योंकि इनमें नादशक्ति है और संसार की उत्पत्ति और लय के मूल में नाद-ध्वनि ही है। रामकथा जीवन को उच्चतम स्तर पर उठाकर इसे सुंदर बना देती है। रामकथा उन चरित्रों की याद दिलाती है जो आज भी जीवंत दिखाई पड़ते हैं। श्रीराम का जीवन सदैव प्रासंगिक रहने वाली कथा है। रामकथा अमोघ मन्त्र-शक्ति से परिपूर्ण है जिसका स्मरण मात्र अत्यंत शुभफल में परिणित हो जाता है। महाकवि तुलसीदास रामचरितमानस में रामकथा की पावनीशक्ति का उल्लेख बड़े चाव से करते हुए कहते हैं कि-



मंगल भवन अमंगल हारी। द्रवउ सो दसरथ अजिर बिहारी॥ 1/111/चौ.2

अर्थात् जिनका नाम जपने से सब सिद्धियाँ सहज ही प्राप्त हो जाती हैं। मंगल के धाम, अमंगल के हरने वाले और दशरथ सूत राम मुझ पर कृपा करें।

रामकथा सुंदर कर तारी। संसय बिहग उड़ावनिहारी॥

रामकथा कलि बिटप कुठारी। सादर सुनु गिरिराजकुमारी॥ 1/113/चौ.1

राम की कथा हाथ की सुंदर ताली है जो संदेह रूपी पक्षियों को उड़ा देती है। फिर रामकथा कलियुगरूपी वृक्ष को काटने के लिए कुल्हाड़ी है। हे गिरिराज कुमारी, पार्वती! इसे आदर से सुनो।

सो मैं तुम्ह सन कहउँ सबु सुनु मुनीस मन लाइ।

रामकथा कलि मल हरनि मंगल करनि सुहाइ॥

1/141

हे मुनीश्वर भरद्वाज! मैं वही कथा जो शिवजी ने कही थी तुमसे कहता हूँ, मन लगाकर सुनो। राम की कथा कलियुग के पापों को हरने वाली, कल्याण करने वाली और बड़ी सुंदर है।

सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान।

सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु बिना जलजान॥

5/60

रघुनाथ का गुणगान संपूर्ण सुंदर मंगलों का देने वाला है। जो इसे आदर सहित सुनेंगे, वे बिना किसी जलयान के ही भवसागर को तर जाएँगे।

बेहतर कल के लिए आज ही बचाएँ

वे. राजू, सहायक लेखा अधिकारी



आज पैसे बचाएँ और कल बेहतर जीएँ। पैसा बचाओ और टैक्स बचाओ। आयकर अधिनियम धारा 80 'सी' के तहत टैक्स पेयर्स को बचत के कई विकल्प प्रदान करता है। उनमें से प्रमुख में प्रोविडेंट फंड, बैंक फिक्स्ड डिपॉजिट, नेशनल सेविंग सर्टिफिकेट और टैक्स सेविंग म्यूचुअल फंड स्कीम शामिल हैं।

म्यूचुअल फंड तीन साल की लॉक-इन अवधि के रूप में जबकि एनएससी पांच और दस साल के दो वेरिएंट उपलब्ध है। करलाभ प्राप्त करने के लिए पांच साल के लिए बैंक एफडी होती है, हालांकि म्यूचुअल फंड (इक्विटी लिंक्ड सेविंग स्कीम्स) की लॉक इन अवधि तीन साल है लेकिन अगर हम चाहें तो अधिक लाभ लेने के लिए इसे अधिक समय तक निवेशित रखा जा सकता है।

हालांकि उपरोक्त सभी योजनाएँ बचत पर कर प्रोत्साहन प्रदान करती हैं फिर भी प्राप्त रिटर्न का कर भरना होता है। एनएससी और बैंक सावधि जमा पर अर्जित ब्याज को आय में जोड़ा जाता है और इस पर कर लगाया जाता है, जिससे कर पश्चात रिटर्न कम हो जाता है। जहाँ भविष्य निधि ब्याज और म्यूचुअल फंड से घोषित लाभांश (पूँजीगत लाभ को दीर्घकालिक माना जाता है) कर मुक्त हैं।

कहावत है कि यदि आपका जहाज सागर के बीच में डूबता है तो आपको तैरना आना आपके हित में है। यदि आप बीमार पड़ते हैं तो दवा खाना ही आपके हित में है। ऐसे ही पीएफ, एफडी और एनएससी कम जोखिम के साथ सुनिश्चित रिटर्न प्रदान करते हैं। ईएलएसएस बाजार से जुड़े रिटर्न और उच्च जोखिम के साथ परिवर्तनीय प्रॉफिट प्रदान करता है। हालांकि, लंबी अवधि का निवेश मुद्रास्फीति से बेहतर लाभांश दे सकता है। कभी-कभी ईएलएसएस लंबी अवधि में सुनिश्चित पीएफ से भी अधिक कमा सकता है।

पीएफ में योगदानकर्ता यदि निकासी कम करते हैं तो अधिक धन प्राप्त कर सकते हैं।

श्री राजू इस कार्यालय के सहायक लेखा अधिकारी हैं जिन्हें इंकमटैक्स और उससे जुड़े बेनिफिट्स के बारे में विशेष जानकारी है। आयकर बचत के नियमों की विशेष जानकारी का लाभ ये कार्यालय कार्मिकों को भी देते हैं और इन नियमों की हिंदी में जानकारी सभी कार्मिकों को सहज उपलब्ध हो इसके लिए आयकर नियमों से जुड़ा इनका आलेख पिछले अंक से नियमित प्रकाशित हो रहा है। भविष्य में भी पाठक आयकर नियमों, टैक्स बेनिफिट्स और बचत के अनेक स्रोतों के विषय में इनकी जानकारी से लाभान्वित होते रहेंगे।

-संपादक

पीएफ राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एनपीएस) से भी बेहतर प्रदर्शन करता है। लो प्रोफाइल स्कीम सेवानिवृत्ति के लिए बचत करने का एक प्रभावी तरीका है। लिक्विड फंड बचत जमा से अधिक कमाते हैं। म्यूचुअल फंड एक विकल्प है जो बचत बैंक खातों के बराबर सुरक्षा और तरलता के साथ बहुत अधिक रिटर्न देता है। ये हैं लिक्विड फंड। इस योजना में कमी यह है कि रिटर्न बाजार परिदृश्य से जुड़ा हुआ है। अगर बाजार गिरता है तो लिक्विड फंड से रिटर्न भी धीरे-धीरे कम हो सकता है।

सही म्यूचुअल फंड स्कीम चुनना आपके लक्ष्यों के अनुरूप होना चाहिए। इक्विटी, डेट और गोल्ड जैसी कई एसेट क्लास की योजनाओं में विविधता लेकर आएं। योजनाएं बाजार के लार्ज कैप, मिड कैप सेगमेंट को लेकर हैं। बचत को एकमुश्त या नियमित रूप से विशिष्ट राशि का निवेश करके बनाया जा सकता है। यह विभिन्न तरीकों की पेशकश करता है जिसमें वे जरूरतों के आधार पर निवेश, लेनदेन और निकासी कर सकते हैं। इसके मोड सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी), सिस्टमैटिक ट्रांसफर प्लान (एसटीपी), सिस्टमैटिक विड्रॉल प्लान हैं।



प्रत्येक योजना में हम वृद्धि, लाभांश भुगतान या लाभांश पुनर्निवेश विकल्प चुन सकते हैं। हमें मुद्रास्फीति और कराधान के घटते प्रभावों से उबरना होगा। रिटर्न को इस तरह से निवेश किया जाना चाहिए कि न केवल वे मुद्रास्फीति की दर से अधिक कमाएं बल्कि कोई अनुचित जोखिम न लेने के साथ कर कुशल भी हों। पारंपरिक बैंक सावधि जमा इसे हासिल करने में सक्षम नहीं हैं। सुरक्षित निवेश और विश्वसनीयता जोखिम कारक की तुलना में प्राथमिकता होनी चाहिए। यदि कोई भविष्य के लिए बचत करना चाहता है जिसमें बच्चों का भविष्य सुरक्षित है तो सेवानिवृत्ति के बाद की योजना के साथ एक वित्तीय योजना में शामिल होना अनिवार्य है।

खुद को बिखरने मत देना

ई के नटराजन, सहायक लेखा अधिकारी



‘उम्मीदों से भरा है, मुझ में कुछ कर गुजरने का हौसला
राह कोई भी हो, कर ही लूंगा एक दिन फतह’

मनुष्य को अपना सुखी जीवन जीने के लिए सकारात्मक सोच रखनी चाहिए। जीवन में रात-दिन की तरह आशा व निराशा के क्षण आते जाते रहते हैं। मनुष्य जिस तरह की भावनाएँ रखता है वैसे ही राह मिलती है। जैसी आशा और जैसा उत्साह हृदय में है वैसी ही सफलता प्राप्त होती है। खुद को इतना कमजोर मत होने दो कि तुम्हें किसी के एहसान की जरूरत पड़े। अगर तुम खुद का सम्मान करोगे तो दूसरे भी आपका सम्मान करेंगे। जीवन में कभी भी आशा को न छोड़े क्योंकि आप कभी यह नहीं जान सकते कि आने वाला कल आपके लिए क्या लाने वाला है।

आजकल सभी परिवार एकल परिवार बनते जा रहे हैं और संयुक्त परिवार की अवधारणा समाप्त हो गई है। माता-पिता भी बच्चों को घर में अकेला छोड़कर रोजगार के लिए जाते हैं, इसलिए बच्चे बड़ों का सम्मान न करना और अवांछित व्यवहारों के संपर्क में आते हैं। उन दिनों संयुक्त परिवार की अवधारणा में बच्चों की देखभाल के लिए दादा-दादी और अन्य रिश्तेदार घर में होते थे। अब एक बाहरी व्यक्ति को बच्चों की देखभाल के लिए नियुक्त किया जाता है।



रोज अकेले घर में और हाथ में कंप्यूटर, सेल फोन होने की वजह से वे हमेशा यूट्यूब, फेसबुक आदि के संपर्क में रहते हैं और अवांछित चीजें सीखते हैं और ये चीजें बच्चों में तनाव बढ़ाती

है। तनाव में वे संभल नहीं सकते हैं इसलिए गलत निर्णय लेते हैं। जैसे घर से भागना, आत्महत्या का प्रयास आदि।

इस तरह के बुरे अनुभवों से बचने के लिए माता-पिता और शिक्षकों को बच्चों की गतिविधियों की बारीकी से निगरानी करनी होगी। उन्हें पढ़ाना है और उपदेश देना है। असफलताओं का सामना करने के लिए तैयार करना है। उन्हें 'नहीं' शब्द से भी अवगत कराया जाना चाहिए। उनके मन में प्रेरणा का भाव बढ़ाना है। यह कार्य अध्यापक और मां-बाप दोनों मिलकर ही कर सकते हैं। छात्रों के मन में अपने जीवन में एक लक्ष्य का निर्धारण करने की सोच बढ़ानी है। आधुनिक भारत में एक जिम्मेदार नागरिक को सक्षम करने के लिए माता-पिता और शिक्षकों को प्रत्येक बच्चे में साहस और सर्वोत्तम आदतों को विकसित करने के लिए आवश्यक कदम उठाने चाहिए। इन बच्चों की तरह बड़ों को भी विभिन्न कारणों से इस प्रकार का तनाव मिलता है जिससे बचाने के लिए सभी को प्रतिदिन योगासन और ध्यान करना चाहिए। अपने कीमती समय में से 15 से 20 मिनट योगा को देना होगा।

आंकड़े डराने वाले हैं। स्रोत बताते हैं कि भारत में हरेक 4 मिनट में एक आदमी आत्महत्या करता है और आत्महत्या करने वालों में से हर चौथा इंसान दिहाड़ी मजदूर है। ये मामले महाराष्ट्र और दिल्ली में सर्वाधिक हैं। देश में आत्महत्याओं की संख्या हत्या के अपराधों से पाँच गुना अधिक है जो चिंतनीय है।

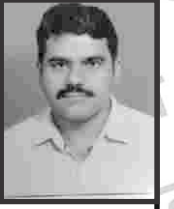
‘उम्मीद आपको कभी छोड़कर नहीं जाती, बल्कि आप ही उस छोड़ देते हैं’। ऐसे में यदि आत्महत्या के खयाल आते हों तो हेल्पलाइन की जरूर मदद लें। भारत में आत्महत्या के मामलों में तेजी आई है। तनाव और मानसिक अवसाद से ग्रस्त लोगों की मदद के लिए कुछ अस्पताल और स्वयंसेवी संस्थाएं काम कर रही हैं। उनके हेल्पलाइन नंबर: आसरा हेल्पलाइन नंबर 91-22-



2754 6669 हैं। मुंबई स्थित एनजीओ ‘आसरा’ मानसिक तौर पर परेशान और अवसाद में घिरे सूइसाइड की ओर प्रेरित लोगों की मदद करती है। हैदराबाद में भी एक स्वयंसेवी संस्था है जो इमोशनल ब्रेकडाउन से जुड़े लोगों की मदद करती है- रोशनी हेल्पलाइन नंबर 91- 40-6620 2000 है।

बिहार की बाढ़

शिवजी पांडेय, लेखाकार



नेपाल में पत्थरों के उत्खनन व खेती के लिए जंगलों की अंधाधुंध कटाई की जा रही है इसलिए जलग्रहण क्षेत्र में कमी आने से बारिश का पानी रुकने की बजाए तेजी से बहकर नीचे चला आता है और ये पानी धीरे-धीरे बिहार के उत्तरी क्षेत्रों की ओर बढ़ने लगता है। बिहार में हिमालय से आने वाली गंगा की सहायक नदियाँ कोसी, गंडक और घाघरा बहुत ज्यादा गाढ़ लाती हैं। इसे वे गंगा में अपने मुहाने पर जमा करती हैं। इसकी वजह से पानी आसपास के इलाकों में फैलने लगता है और बाढ़ का कारण बन जाता है। बिहार करीब 40 साल से हर बार बाढ़ की विभाषिका झेल रहा है। हम आपको बताना चाहते हैं कि आखिरकार बिहार में बाढ़ बार-बार क्यों आती है।



जब बाढ़ आती है तो इसका उपाय भी होता है, लेकिन उपाय सफल नहीं होते। इस कारण लोगों को बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ता है। सबसे बड़ी समस्या यह है कि बिहार नेपाल से काफी नजदीक है। दरअसल बिहार में बाढ़ की वजह नेपाल से आने वाला पानी है। बिहार के सात जिले पूर्वी चंपारण, पश्चिमी चंपारण, सीतामढ़ी, मधुबनी, सुपौल, अररिया व किशनगंज नेपाल से सटे हुए हैं। नेपाल के पहाड़ी क्षेत्रों में तेज वर्षा होती है, तो यहां से निकलने वाली कोसी, घाघरा, पांडक और छोटी-छोटी नदियां निचले क्षेत्रों में जल भर देती हैं। बाढ़ में यह विकराल रूप धारण करके बाढ़ का कारण बन जाता है। सभी जिलों में देखा जाए तो सबसे ज्यादा बाढ़ विभाषिका सीतामढ़ी जिला में होती है क्योंकि यह नेपाल से काफी नजदीक है। जब भी बाढ़ आती है तो बिहार के लोगों को काफी परेशानी झेलनी पड़ती है। लंबे समय तक पीने के लिए शुद्ध पानी, नहाने के लिए शुद्ध पानी नसीब नहीं होता है। खाना पकाने के लिए भी पानी नहीं मिल पाता है। सबसे पहले बाढ़ आने पर बिजली काट दी जाती है और सारे घरों को अंधेरे में रहना पड़ता है। आय की हानि, लोगों की खर्च शक्ति में कमी और बाजार बंद होने से बुनियादी सुविधाओं से वंचित हो जाना पड़ता है जो लोगों की आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर कर देता है। गंगा के किनारे बहुत सारे गांव हैं, वहाँ भी स्थिति बहुत ही भयावह हो जाती है। यह बाढ़ हम बिहारवासियों के लिए अभिशाप है।

एक समय की बात है कि मैं तब गाँव में ही रहता था। साल 2003 की बात आपको बता रहा हूँ। मेरा गाँव पटना मंडल के भोजपुर जिले में स्थित है। पंचायत का नाम सुंहिया है और गाँव का नाम सोनकी। मेरे गाँव के उत्तर में गंगा और दक्षिण में भी नदी स्थित है। दोनों तरफ से मेरा पंचायत गाँव नदी से घिरा हुआ है। एक दिन की बात है, गंगा नदी में बहुत पानी आ गया था। रात को हम लोग घर में सो रहे थे, उस समय सब कुछ सही लग रहा था। सपने में भी हम लोगों ने नहीं सोचा कि कुछ होगा। रात को सो कर जब सुबह उठकर देखा तो चारों तरफ पानी ही पानी दिखाई दे रहा था। हम लोगों के पास कुछ भी नहीं था। न पीने के लिए पानी, न रहने के लिए घर। लेकिन भगवान की कृपा से हमारा घर पक्का था। मेरे पापा बोले कि आप लोग जल्दी से सामान को ऊपर छत पर ले जाओ। हम लोग जल्दी-जल्दी सामान को ऊपर ले गए। मेरी माँ ऊपर ही खाना बनाती थी और हम लोग खाते थे। पंचायत के मुखिया ने हर वार्ड में एक नाव दी थी। उसी से सब्जी लाना और सब सामग्री लाते थे। हम लोग के घर में पानी बह रहा था। बाढ़ की स्थिति देखकर लगता था कि हम लोगों को घर ही छोड़ देना चाहिए। उसमें भी कभी-कभी ऊपर से वर्षा भी हो जाती थी। ऐसी सारी स्थिति हो गई थी कि जीना मुश्किल हो गया था लेकिन अचानक घोषणा हुई कि अब पानी घट रहा है। 10 दिनों के बाद पानी कम हुआ पानी धीरे-धीरे कम होता गया। लेकिन दुर्गंध फैल रही थी। जगह-जगह दलदल हो गया था। फिर भी हमारा गाँव था हम कैसे कहीं छोड़ कर जाते! मेरा घर मेरा खेत सब कुछ तबाह हो गया था। लेकिन लोग धीरे-धीरे रास्ते पर आ गए। गाँव में आज साल में एक बार बाढ़ आ ही जाती है और फिर वही नाटकीय जीवन शुरू होता है। सरकारें कुछ नहीं कर पाती हैं, कुछ योजनाएं लाती हैं और फिर शांत हो जाती हैं। विकास होता है, फिर एक दिन बाढ़ उस विकास को विनाश में बदल देती है। हवाई जहाज के द्वारा कभी-कभी चावल चना पावरोटी गिराते रहते हैं। हम लोग छत पर बैठकर देखते थे कि कहीं कुछ गिरा रहे हैं या नहीं। जहाज की आवाज आने पर हम लोग खड़े हो जाते हैं, कि देखें क्या गिर रहा है। तो देखते हैं कि रोट-चना का थैला गिरा रहे हैं। वही सब खाकर जीवन चलाते हैं। मासूम बच्चे और लोग डूब जाते हैं। उस समय एनडीआरएफ की टीम भी नजर नहीं आती है। कोई गाड़ी चलाने के, कोई गाय भैंस चराने के लिए जाते हैं और डूब जाते हैं। स्कूल, कॉलेज, पंचायत भवन सब जलमग्न हो जाते हैं। पदाधिकारी से पूछने पर वे बताते हैं कि हमको पता नहीं कितने दिन स्कूल बंद रहेंगे। यह कहकर पल्ला झाड़ देते हैं। जगह-जगह पर गंगा कटाव शुरू कर देती है। बाढ़ की आशंका देखकर प्रशासन अलर्ट पर रहता है, होता कुछ भी नहीं।

छोटे-छोटे बच्चों का घर में रहना मुश्किल हो जाता है। इसलिए गाँव से शहर की तरफ ज्यादा से ज्यादा लोग पलायन करते हैं। लोग शहर में जमीन खरीद कर घर बना लेते हैं। कोई बाहर कमाने गया है, बाढ़ आती है तो गाँव पर नजर रखता है कि पानी निकला की नहीं। बाहर से समाचार देखते हैं तो पता चलता है कि शाहपुर में गंगा नदी उफान पर लेकर लगातार बढ़ रही है। बिहार को बाढ़ से निदान नहीं मिल सका है और सदियों से ऐसा चल रहा है।

कार्यालय में योग अभ्यास

एम. प्रेमलता, सहायक लेखा अधिकारी



हमारे कार्यालय की अनूठी विशेषताओं में से एक योग हॉल है। एक समर्पित स्थान योग के लिए आवंटित किया गया था और हमारे कार्यालय के कर्मचारियों के कल्याण के लिए 'योग हॉल' का उद्घाटन श्री जयशंकर, आईएस, महालेखाकार, द्वारा 2019 में किया गया था। लंच ब्रेक के दौरान हर दिन नियमित योग कक्षाएं श्री गोपीनाथ, जो जीपीएफ समूह में पर्यवेक्षक हैं, के द्वारा संचालित की जा रही हैं। वे श्री बीकेएस अयंगर के छात्र हैं, जो 'आयंगर योग संस्थान' के संस्थापक हैं। ये कक्षाएं बिना किसी व्यवधान के नियमित रूप से संचालित की जा रही हैं। यहां तक कि कोविड के समय में भी कोविड के मानदंडों का पालन करते हुए कक्षाएं संचालित की जा रही थीं। योग को संसार में शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए अनन्य स्थान प्राप्त हो चुका है। यहाँ तक की भारत सरकार भी सरकारी स्तर पर योग को प्रोत्साहन देकर देशवासियों के आरोग्य की कामना करती है और इसी को ध्यान में रखकर योग-दिवस मनाने का शुभारम्भ किया गया है।



लॉकडाउन के दौरान भी ऑनलाइन कक्षाएं संचालित की गईं थी जिससे अनेक कार्मिक लाभान्वित हुए और कोविड महामारी के चरम स्तर के दौरान मानसिक स्वास्थ्य का लाभ उठाया। योग सीखने से हममें से कई लोगों को कई तरह से मदद मिली है। इसने डॉक्टर और फिजियोथेरेपी केंद्रों के हमारे लगातार दौरों को समाप्त कर दिया है। हमारे योग समूह के एक सदस्य के रूप में मुझे अत्यधिक लाभ हुआ है और योग को हमारे जीवन में शामिल करने के लिए हमारे कार्यालय के प्रशासन और हमारे योग गुरु को अपना हार्दिक धन्यवाद।

हिंदी दिवस का राष्ट्रीय आयोजन

एम. सुधाकरन, वरिष्ठ लेखा अधिकारी



दिनांक: 14.09.2022 माननीय केंद्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह, गृह राज्यमंत्री श्री अजय कुमार मिश्र, गृह राज्यमंत्री श्री निशित प्रामाणिक, राज्य के मुख्यमंत्री महोदय और राज्य के गृहमंत्री महोदय के साथ मंच पर पधारे। ज़ोरशोर से सबका स्वागत हुआ और कार्यक्रम को चार-चाँद लग गए। राजभाषा की सचिव महोदया, सुश्री अंशुली आर्य ने आगंतुक विभूतियों का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया। सामूहिक रूप से राष्ट्रगान गाया गया और संस्कृत के वैदिक मंत्रों के उच्चारण के साथ दीप प्रज्वलित कर राष्ट्रीय हिंदी पखवाड़े का उद्घाटन माननीय गृहमंत्री श्री अमित शाह के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। इस तरह कार्यक्रम की छटा और शोभा अद्वितीय और आनंद विभोर करने वाली बन गई।

इसी अवसर पर देश के गृह राज्यमंत्रीजी श्री अजय कुमार मिश्र ने राजभाषा के संबंध में अपने विचार व्यक्त किए और स्वतंत्रता के बाद से देश की प्रथम राजभाषा होते हुए भी देश में अंग्रेजी के हावी रहने के कारणों पर प्रकाश डालते हुए हिंदी के मार्ग की बाधाओं पर चिंता व्यक्त



की। माननीय गृहमंत्री श्री अमित शाह के उद्बोधन से पूर्व ही पांडाल तालियों की गड़गड़ाहट और जोशपूर्ण आगाज से गूंज उठा। उन्होंने देश विदेश के मंचों से प्रधानमंत्रीजी के हिंदी उद्बोधनों से हिंदी के विश्वमंच पर प्रतिष्ठापित होने पर प्रसन्नता व्यक्त की। साथ ही स्वयं के गुजराती माध्यम के विद्यार्थी होने पर भी आसानी से हिंदी सीख लेने पर हिंदी की अन्य भाषाओं से निकटता को अभिव्यक्त करते हुए कहा कि हिंदी सभी भारतीय भाषाओं की सखी है, इसकी किसी भी भारतीय भाषा से कोई स्पर्धा नहीं है। हमें अपने बच्चों को उनकी मातृभाषा के साथ हिंदी सिखानी चाहिए क्योंकि आज का युग हिंदी का युग है और आगे बढ़ने का मार्ग हिंदी से होकर प्रशस्त होता है। उन्होंने स्वदेशी हिंदी अनुवाद टूल 'कंठस्थ-2.0' और 'हिंदी शब्द सिंधु-1' डिजिटल ई-शब्दकोश देश को लोकार्पित किए और सरल हिंदी शब्दों का प्रयोग करने का आह्वान किया।

आपके अभिमत

कार्यालय महालेखाकार(लेखापरीक्षा), वीरचंद पटेल मार्ग, बिहार पटना, 800001

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका के 30वें अंक की ई-पत्रिका प्राप्त हुई। इस हेतु धन्यवाद एवं बधाई। पत्रिका की साजसज्जा, पठन-सामग्री एवं मुद्रण बहुत आकर्षक है। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ रोचक एवं पठनीय हैं। तमिलनाडु एक परिचय, रामचरितमानस की लोकप्रिय चौपाईयाँ, सिनेमा और समाज, स्वास्थ्य ही धन अति रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। राजभाषा हिन्दी के निरंतर विकास और कार्यालयीन कार्मिकों की सृजनशीलता को एक सुहृद मंच प्रदान करने में 'अमृत' ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। पत्रिका के भविष्य के लिए अप्रतिम शुभकामनाओं सहित सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को साधुवाद एवं बधाई।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), झारखंड, रांची

आपके कार्यालय से प्रकाशित हिन्दी गृह ई-पत्रिका 'अमृत' के 30वें अंक की ई-प्रति की प्राप्ति हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित जल ही जीवन, हमारे कार्यालय में हिन्दी की भूमिका, गाँव की कहानी, स्वास्थ्य ही धन आदि रचनाएँ अत्यंत ही उच्चतर श्रेणी की हैं। पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादन मंडल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

कार्यालय महालेखाकार (ले व ह) ओडिशा, भुवनेश्वर - 751001

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी गृह पत्रिका 'अमृत' के 30वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका प्रेषण के लिए अनेक अनेक धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित जिसमें वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) रचना 'कोरोना को यूँ हराना है', श्री सुभाष चंद की 'रामचरितमानस की लोकप्रिय चौपाईयाँ', श्रीमती बी. जुलियट विमला की रचना 'हमारा गौरव', श्रीमती एस कल्याणी की रचना 'अबेक जन्म मोही फिर तू ही मिलियो' एवं श्री अनिल कुमार की रचना 'महामारी' आदि रचनाएँ विशेष रूप से सराहनीय हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए सफल प्रकाशन हेतु संपादन मंडल को हार्दिक बधाई।

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चेन्नै का कार्यालय, लेखापरीक्षा भवन, तेनामपेट, चेन्नै

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित कार्यालयीन हिन्दी गृह पत्रिका "अमृत" का 30वां अंक इस कार्यालय में ईमेल के माध्यम से प्राप्त हुई। धन्यवाद। पत्रिका की संरचना आकर्षक एवं सटीक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पठनीय, प्रेरक, ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। सभी रचनाएँ एक से बढ़कर एक हैं। श्री आर. विश्वनाथन कृत "वाह वे भी क्या दिन थे", भावानात्मक, श्री आर शांति कृत "स्वास्थ्य ही धन" ज्ञानवर्धक, श्री एम. रामास्वामी कृत "हमारे कार्यालय में हिन्दी की भूमिका" विचारात्मक एवं श्री संजय कुमार सिंह कृत "कुछ शायरी, कुछ नज्में" प्रेरणादायक हैं। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकार एवं संपादन मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए इस कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा (गृह शिक्षा एवं कौशल विकास) इन्द्रप्रस्थ इस्टेट, नई दिल्ली

कृपया आपके कार्यालय के ईमेल दिनांक 28.09.2021 का संदर्भ लें जिसके द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार की दिशा में हिन्दी गृह पत्रिका 'अमृत' के 30वां अंक की ई-पत्रिका ईमेल द्वारा इस का कार्यालय को प्राप्त हुई, सहर्ष, धन्यवाद। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा मुद्रण अति उत्तम है। श्री एन. दिनकरन, वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) की कविता 'कोरोना को यूँ हराना है' एवं सश्री मीना पूनम ज्योति, वरिष्ठ लेखा अधिकारी का लेख 'बच्चे बनकर काटें लॉक डाउन' अत्यंत ही प्रशंसनीय है। पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ ज्ञानवर्धक, लाभप्रद तथा पूर्ण रूप से पठनीय हैं। श्रेष्ठ संपादन के लिए पत्रिका परिवार को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले व ह), बिहार, पटना

उपर्युक्त विषयक आपके कार्यालय के ई-मेल दिनांक 28.09.2021 के द्वारा आपके कार्यालय की हिंदी वार्षिक पत्रिका "अमृत" के 30वें अंक की ई-प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। अंक पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका का आवरण एवं साज सज्जा सुंदर एवं लुभावना है। उसका बाहरी रूप ही नहीं, आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है। सुभाष चंद की 'रामचरितमानस की लोकप्रिय चौपाईयाँ', सुश्री मंजू मोनिषा डी. का लेख 'जल ही जीवन' एवं सुश्री कल्याणी पलवेश की कविता 'ऑलिंपिक की खुशियाँ' काफी रोचक, सराहनीय एवं जानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादनमंडल बधाई का पात्र है। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे ऐसी हमारी शुभकामनाएँ हैं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हरयाणा, दक्षिण मार्ग, चंडीगढ़-16020

आपके पत्र सं.हिंदी कक्ष/पत्रिका/2021-22, दिनांक 24.09.2021 दिनांक के द्वारा ई-पत्रिका 'अमृत' के 30वें अंक के ई-संकलन की प्रति भेजने हेतु धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पाठकों के लिए जानवर्धक एवं मन को लुभाने वाली हैं। 'कोरोना यूँ हराना है', 'रामचरितमानस की लोकप्रिय चौपाईयाँ', 'जल ही जीवन', 'नई दुनिया की सैर', 'हमारा गौरव', 'स्वास्थ्य ही धन' विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस पत्रिका को सफल एवं उच्च कोटि का बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं इस पत्रिका के संपादन मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं ह), पंजाब एवं यू.टी. चंडीगढ़

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका अमृत का वर्तमान अंक प्राप्त हुआ। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति मनोहर एवं आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी अति मनमोहक हैं। श्री शशिकांत कुमार का लेख तमिलनाडु, एक परिचय उक्त राज्य की सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक पृष्ठभूमि को अति सुंदर अभिव्यक्ति प्रदान करता है। श्री आर विश्वनाथन का वाह वे भी क्या दिन थे। एक संपूर्ण जीवंत वृत्तांत से कम नहीं है। सुश्री आर शांति का स्वास्थ्य ही धन है आधुनिक दौर में शांतिमय प्रेरणा का स्रोत है। श्री सुभाष चंद का रामचरितमानस की लोकप्रिय चौपाईयाँ वर्तमान में एक आध्यात्मिक वरदान साबित हो रहा है जो कि इस भाग दौड़ भरे जीवन में शीतलता का अहसास करवाता है। श्री राजीव कुमार की कविता गाँव की कहानी भी एक सुखद प्राचीन अतीत की ओर आकर्षित करती है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

कार्यालय महालेखाकार (ले एवं ह), मेघालय, शिलांग

आपके कार्यालय की हिंदी वार्षिक पत्रिका अमृत के तीसवें अंक की इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्ति हुई है। पत्रिका में समाहित सभी लेख व कविताएँ उच्चकोटि की हैं। श्री शशिकांत कुमार रचित तमिलनाडु एक परिचय, वी राजू द्वारा रचित वरिष्ठ नागरिकों के लिए आयकर व अन्य लाभ, श्री राजीव कुमार द्वारा रचित गाँव की कहानी अत्यंत सूचनात्मक, जानवर्धक एवं रोचक हैं। आशा करती हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मक प्रगति हेतु शुभकामनाओं सहित।

कार्यालय महालेखाकार, लेखापरीक्षा-II, महाराष्ट्र, नागपुर

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका अमृत के 30 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख व कविताएँ रोचक एवं जानवर्धक हैं। विशेषकर श्री एम रामास्वामी, सहायक लेखा अधिकारी की कविता सोच बदलो हालात बदलेंगे, श्री संजय कुमार सिंह, कनिष्ठ अनुवादक का लेख मेरा

दामाद, मेरा भगवान तथा श्री शशिकांत कुमार, डीईओ का लेख तमिलनाडु एक परिचय उल्लेखनीय एवं सराहनीय है। पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्जवल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), तमिलनाडु एवं पुदुचेरी

‘अमृत’ के माध्यम से राजभाषा उन्नयन हेतु विभाग का यह कार्य स्तुत्य एवं सराहनीय है। विभिन्न विषयों पर रचनाएँ, लेख, कविताएँ, ग़ज़ल इत्यादिसे सुजजित यह अंक उत्कृष्ट, पठनीय और सरल भाषा में हैं तथा संकलन योग्य है। ‘अमृत’ में अंतर्निहित सभी रचनाएँ विशेष कर तमिलनाडु एक परिचय, जल ही जीवन, वरिष्ठ नागरिकों के लिए आयकर व अन्य लाभ, हमारे कार्यालय में हिंदी की भूमिका, सिनेमा और समाज, सोच बदलो हालात बदलेगी, अमन की ताकत; अत्यंत शिक्षाप्रद, नीतिपरक, सराहनीय और प्रासंगिक भी है। आशा करते हैं कि भविष्य में भी आपकी पत्रिका हिंदी के प्रयोग में वृद्धि हेतु एक महत्वपूर्ण कड़ी साबित होगी। ‘अमृत’ के कुशल संपादन, रचनाओं का चयन, संकलन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को “कुरिंजि” परिवार बधाई देती है तथा ‘अमृत’ के अनवरत प्रकाशन एवं उत्तरोत्तर प्रगति कीकामना करती है। हार्दिक शुभकामनाएँ।

कार्यालय महानिदेशक, लेखापरीक्षा (केंद्रीय प्राप्ति) इंद्रप्रस्थ ईस्टेट, नई दिल्ली-110002

आपके कार्यालय से प्रकाशित वार्षिक गृह पत्रिका अमृत के 30 वें अंक की प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई, धन्यवाद। पत्रिका की साज-सज्जा आकर्षक है तथा सभी रचनाएँ सराहनीय हैं। श्री वे. राजू, सहायक लेखा अधिकारी का लेख वरिष्ठ नागरिकों के लिए आयकर व अन्य लाभ, श्री एम. रामास्वामी, सहायक लेखा अधिकारी की कविता सोच बदलो हालात बदलेगी तथा श्रीमती कल्याणी, सहायक लेखा अधिकारी की कविता ऑलपिक्स की खुशियाँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। आपके कार्यालय की पत्रिका ‘अमृत’ का यह अंक, राजभाषा हिंदी की प्रगति की दिशा में अद्वितीय है। उत्तरोत्तर उन्नति हेतु शुभकामनाएँ।

कार्यालय महालेखाकार (लेखा पात्रता) -II, महाराष्ट्र

इस कार्यालय में आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका "अमृत" का 30 वां की एक प्रति हुई है तदहेतु धन्यवाद। सर्वप्रथम, पत्रिका प्रेषण के लिए सहर्ष सधन्यवाद। पत्रिका की साज-सज्जा, छायाचित्र प्रशंसा के पात्र है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ समयानुकूल, ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी तथा शिक्षाप्रद हैं जो बरबस ही पाठक- वृंद को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं सभी सहयोगियों को हार्दिक बधाई, शुभकामनाएँ।

कार्यालय रक्षा सम्पदा महानिदेशालय, दिल्ली छावनी-110010

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका "अमृत" का 30वां अंक अपनी रोचक और नवीन विषय वस्तु के कारण बेहद प्रभावशाली है। पत्रिका प्रकाशन का उद्देश्य राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में कार्मिकों की रुचि बढ़ाना है इसमें आप सफल रहे हैं। फिर भी कुछ कृतियों चला यथा 'वाह वे भी क्या दिन थे', 'तमिलनाडु एक परिचय', 'हमारे कार्यालय में हिंदी की भूमिका' तथा 'नई दुनिया की सैर' जैसे लेख वर्तमान कोविड काल में सकारात्मक दृष्टिकोण उपलब्ध कराते हैं। आपके प्रयास सराहनीय है।



हिंदी पखवाड़ा 2022: उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए हिंदी अधिकारी



हिंदी पखवाड़ा 2022: अंताक्षरी स्पर्धा के आयोजक और प्रतिभागियों का समूह चित्र



हिंदी पखवाड़ा 2022 की क्विज़ स्पर्धा का समूह चित्र



हिंदी पखवाड़ा 2022 की अंताक्षरी स्पर्धा आयोजित करते श्री रामासामी